चकमक

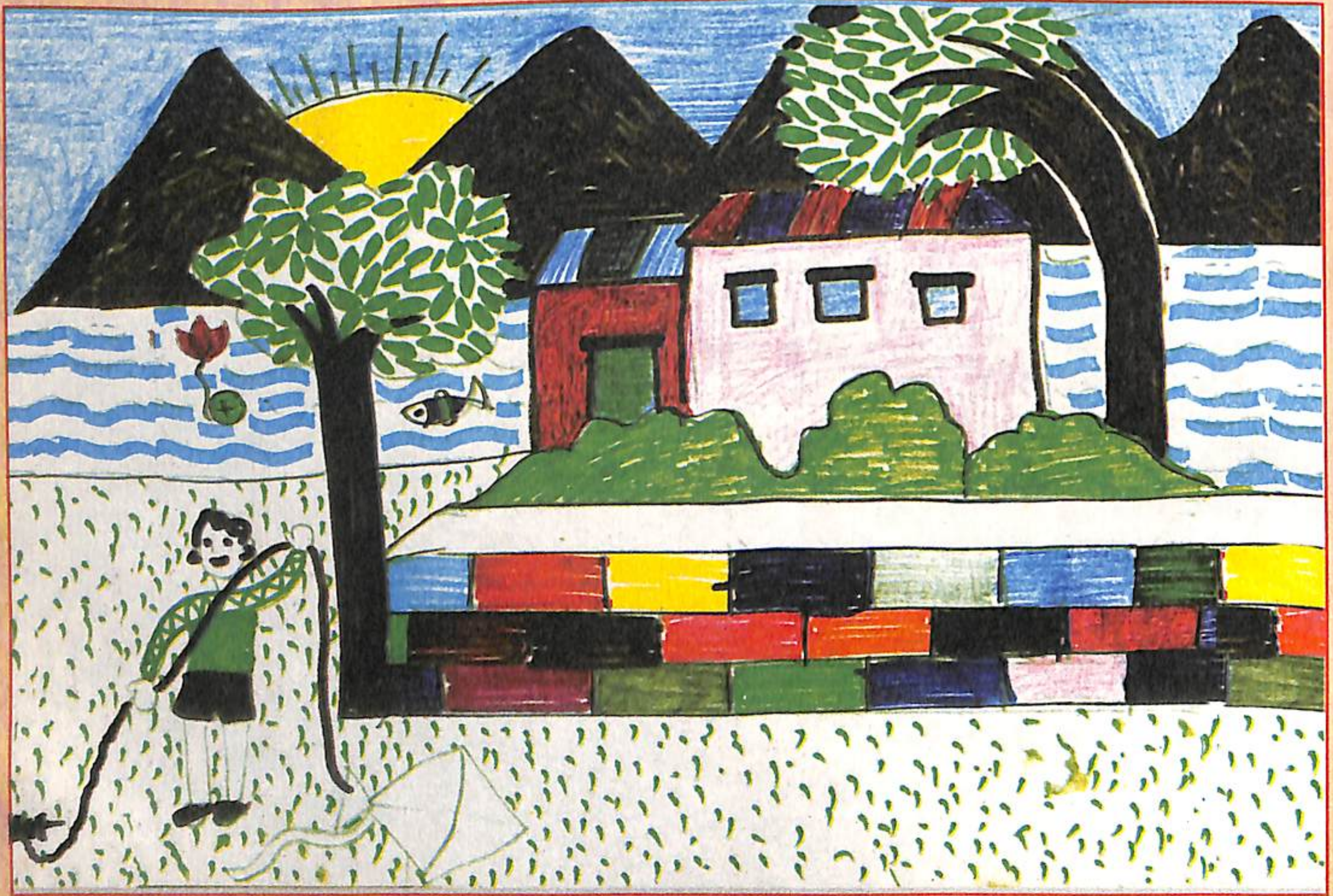
दिसम्बर, 2002 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00



पेड़ की कीमत



पूर्वा वशिष्ठ, भोपाल, म.प्र.

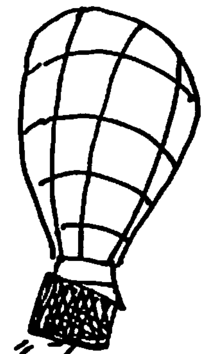


सिद्धार्थ अग्रवाल, चौथी, भोपाल, म.प्र.

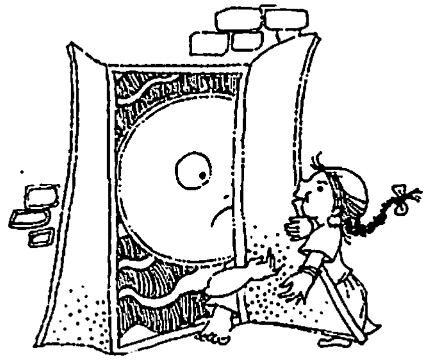
एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-18 अंक-6 दिसम्बर 2002



क्या-क्या है इस अंक में ?



क्या चाँद सचमुच बन्नो के घर आया था? पढ़ो मज़ेदार कहानी में, पेज 14 पर ...



क्या तुम जानते हो कि एक पेड़ की कीमत क्या होती है? इसी विषय पर है इस बार का एक लेख, पेज 10 पर ...

कहानी

कविताएँ

खेल-प्रयोग

हर बार की तरह

और यह भी

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात ....

हमारे आसपास क्या हो रहा है... शायद सब जानते हैं। अभी भी इतनी उम्मीद तो बाकी है कि सब इससे दुखी ही होते होंगे?

यह कहते ही एक सवाल खड़ा हो जाता है..... तो फिर कौन हैं जिन्हें यह सब अच्छा लगता है? उन्हें क्यों अच्छा लगता है? या कहो कि उनका कौन-सा काम सध जाता है। शायद यह बात भी सब जानते हैं ... बस दुख इसी बात का है। जानते सब हैं, लेकिन कदम कम ही बढ़ते हैं।

पिछले दिनों चकमक के कुछ पाठकों ने एक कविता भेजी है जो उन सबने मिलकर लिखी है। हम यहाँ वही दे रहे हैं। शायद बड़ों के कुछ काम आ जाए ....।

दुष्टों ने किया पंगा
गुजरात में हो गया दंगा
लोग फँस गए दंगे में
नेताओं के पंगे में
लोग जलाए गए ज़िन्दा
आदमी बन गया दरिंदा

लोग हो गए बेघर
गुण्डों ने बढ़ाया डर
कुछ लोगों ने की निंदा
कुछ लोगों ने की चिंता
प्रधानमंत्री ने कहा सब है चंगा
गुजरात में हो गया दंगा
झुका नहीं तिरंगा
मोदी हो गया नंगा

(जिबिन, शिवांक, अरुण, कार्तिकेय, सभी दिल्ली)

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-18 अंक-6 दिसम्बर, 2002

सम्पादन
विनोद रायना
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

सहयोग
राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)

फोन : 463380

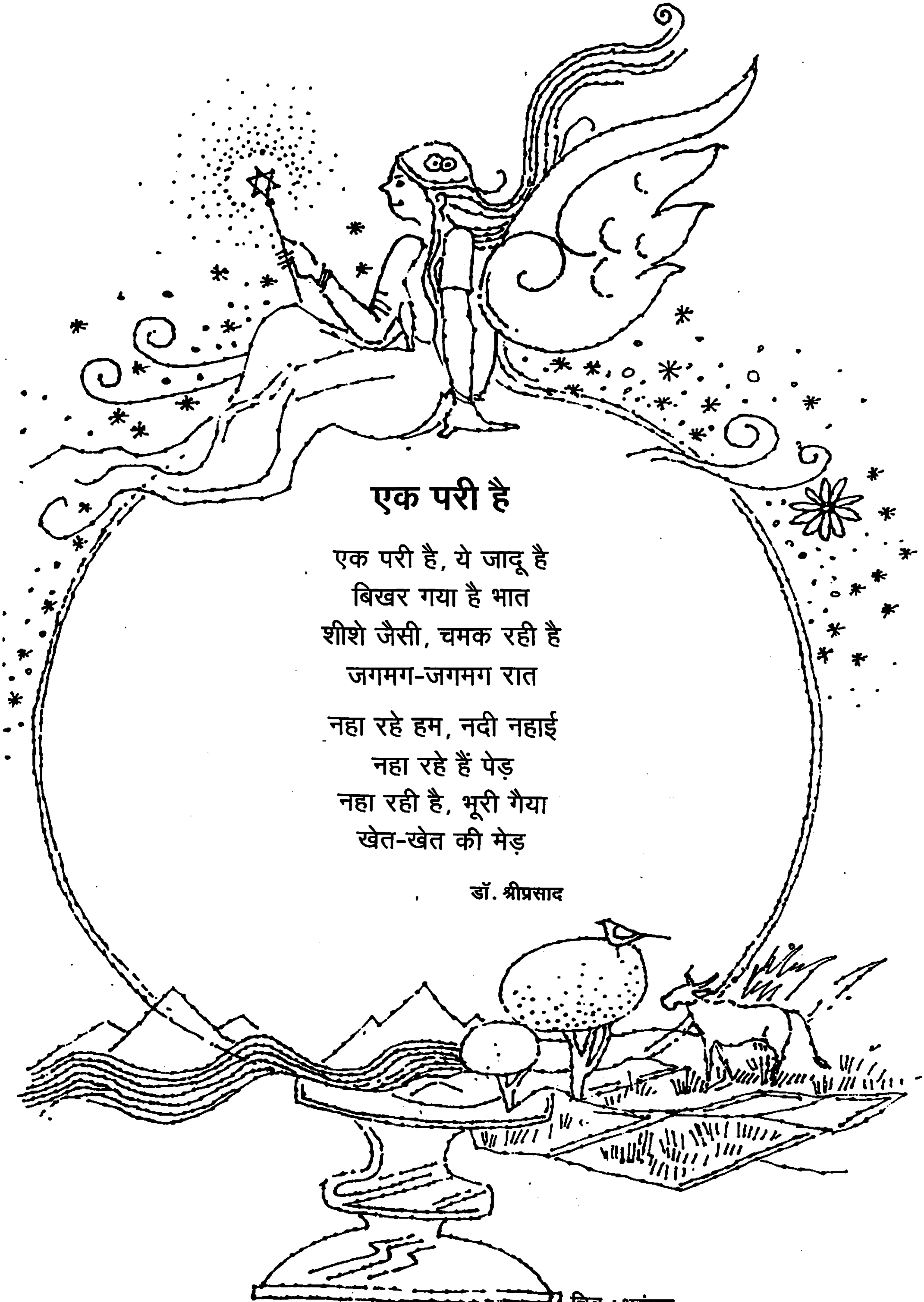
कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



एक परी है

एक परी है, ये जादू है
बिखर गया है भात
शीशे जैसी, चमक रही है
जगमग-जगमग रात

नहा रहे हम, नदी नहाई
नहा रहे हैं पेड़
नहा रही है, भूरी गैया
खेत-खेत की मेड़

डॉ. श्रीप्रसाद

चित्र : धनंजय

नीम का पेड़

नीम का पेड़ हम जो हैं बोते
यह पेड़ उगता है बहुत घना
बारीक पत्ते होते हैं इसमें
परन्तु होता है इसका मोटा तना

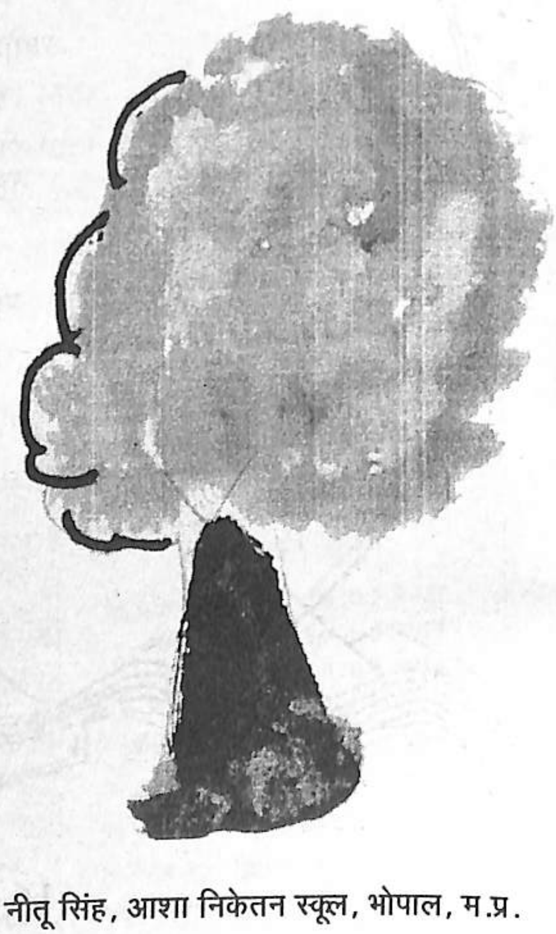
फल होते हैं इसके कड़वे
जो होते हैं बहुत गुणकारी
दवा बनती हैं इनसे अनेक
जो होती हैं बहुत ही लाभकारी

● रेनू परमार, पाँचवीं, (पता नहीं लिखा)

जब आग बुझाई जंगल की

बात आज सुबह की है। मैं और मेरी बहन सोनम अपने पापाजी के साथ बड़े सबेरे जंगल घूमने गए थे। हम लोगों ने देखा कि जंगल में एक बहुत बड़े घेरे में आग लगी है। सूखी छोटी-छोटी घास बर रही है। पापाजी ने देखते ही कहा कि अरे इस घास को बुझाना चाहिए नहीं तो बड़ा नुकसान हो जाएगा जंगल का। और वे सागौन के हरे-हरे पत्ते तोड़कर उस आग को बुझाने दौड़ पड़े। हम लोगों को डर लग रहा था। इतने में एक आदमी और घेवले के पत्ते लेकर आग बुझाने लगा। और थोड़ी देर में आग बुझ गई। पापाजी को बहुत संतोष मिला। बोले आज अच्छा काम हुआ। अच्छा काम करने पर सहायता करने वाले भी मिल जाते हैं। फिर हम लोग नीम की दातौन करते हुए वापिस आ गए।

● साकेत गुप्ता, चौथी, शाहगढ़, सागर, म.प्र.



● नीतू सिंह, आशा निकेतन स्कूल, भोपाल, म.प्र.



ईद

ईद के दिन मम्मी ने 5 बजे उठकर नहा-धोकर सिमइयाँ बनाईं और पापा भी उठकर नहा-धोकर ईदगाह नमाज़ पढ़ने गए। पापा ईदगाह में सबसे गले मिले और मम्मी, चाचा, भैया और दादा भी तैयार होकर ईदगाह नमाज़ पढ़ने गए। मम्मी के साथ हमारी बड़ी बहन और हम सबने नमाज़ पढ़ी। नमाज़ पढ़कर हम सब गले मिले। मस्जिद में भी दादा, पापा, चाचा भी नमाज़ पढ़कर गले मिले। फिर मेरी बड़ी बहन और मैं सबके घर सिमइयाँ खाने के लिए गए। सब हमारे घर सिमइयाँ खाने आए। इस दिन हमारी मम्मी, बड़ी मम्मी और बड़ी बहन की हालत बिगड़ ही गई थी। लेकिन ईद पे हमारे घर बहुत मज़ा आया।

चित्र एवं रचना ● रुखसार बानो, छठवीं, होशंगाबाद, म. प्र.

सपनों की परी

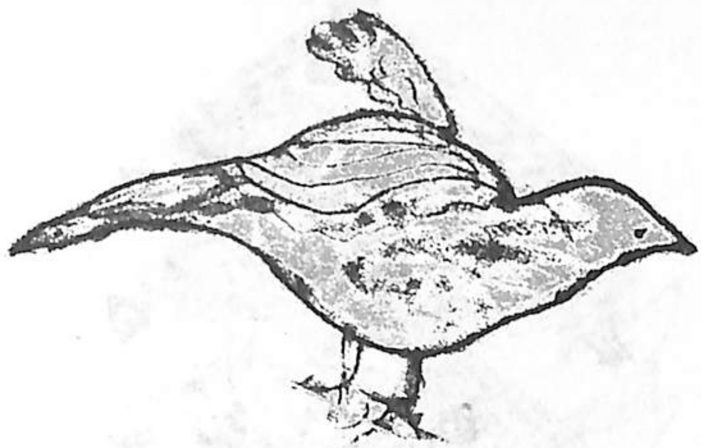
कल रात एक सपना आया,
क्या बताऊँ कितना था सुन्दर
देखी उसमें एक परी,
नाम बताया उसने मेरी।
मैंने पूछा कहाँ से आई?
कहाँ से लाई इतनी चमक?
फैला दिया चारों ओर उजियारा,
बोली मेरा घर एक तारा।

जब मेरी आँख खुली तो
पाया कमरे में थे कई उपहार,
चारों ओर चमक थी फैली,
आ गई परियों की बहार।
अब मैं खुशी से चिल्लाई,
पूछो न कैसा हाल था भाई
लेकिन जब मम्मी-पापा आए,
परियों ने कर दिया गुडबाय।

● प्रितीश चौधरी, चौथी, (पता नहीं लिखा)



● प्रकृति जोशी, विशाखा



● उरुसा ज़बीं, तीसरी, शेरघाटी, बिहार



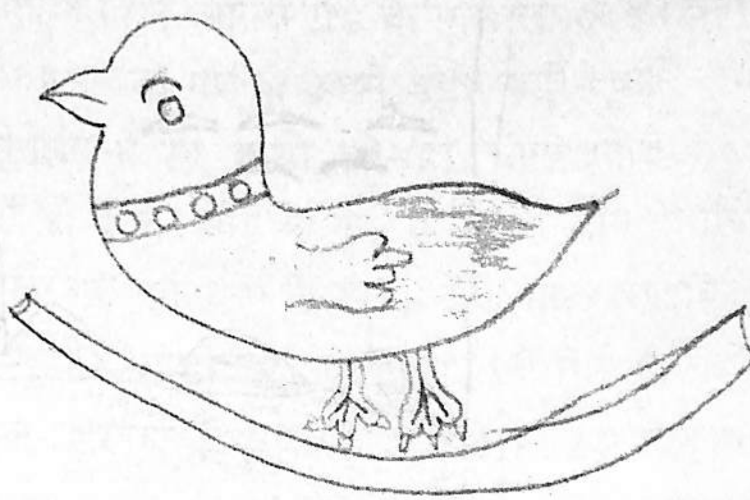
● अभिलेख मिश्र, साढ़े आठ वर्ष, देहरादून, उत्तरांचल



क्षितिज मिश्रा, छह वर्ष, डिण्डौरी, म.प्र.



● हनुमान बैखा, चौथी, अराँई, राजस्थान



● मिलिशा दुभाषे, आठ वर्ष, देवास, म.प्र.

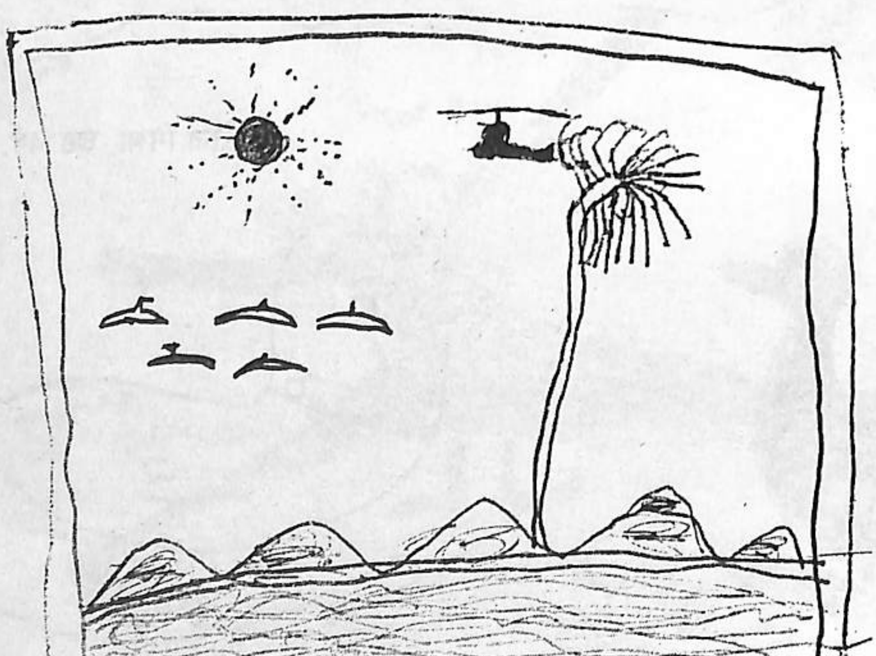
सूरज दादा

सूरज दादा रोज आकर
देते पृथ्वी को उजियारा
अँधेरे को वो दूर भगाते
और खुद पृथ्वी के ऊपर बैठ जाते
धूप की इतनी लम्बी चादर बिछाते
कि पूरी धरती ढँक जाती
जब आई रात की बारी
सूरज दादा ने अपनी चादर हटाई
बच्चों से कल आने का करके वादा
घर की ओर चले सूरज दादा

● रीता, सातवीं, देवास, म. प्र.



● नील ताम्हणे, साढ़े चार वर्ष, इंदौर, म.प्र.



● अज़हरुद्दीन, तीसरी, बुढ़ार, शहडोल, म. प्र.



● रजनी, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.

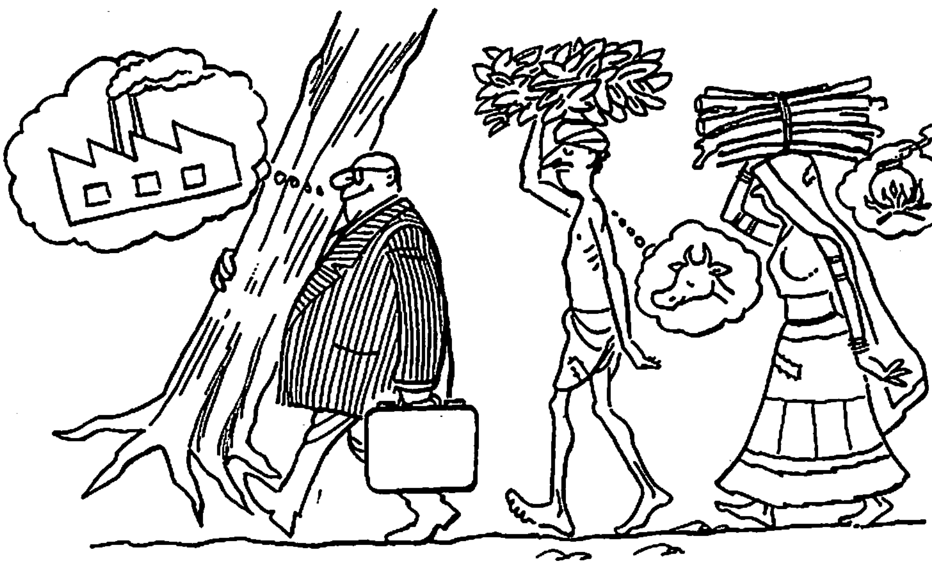
देवास शहर का मेला

देवास में मेला बहुत ही अच्छा लगता है। वह आगरा रोड के पास लगता है। वहाँ सब लोग बहुत ही तेज़ी से जाते हैं। हम वहाँ गए तो उसमें बड़ी-बड़ी दुकानें लगी थीं। वहाँ चिड़ियाघर भी था। चिड़ियाघर में शेर, हाथी, लोमड़ी, चीता आदि जानवर थे। मैंने वहाँ मौत का कुआँ भी देखा। मौत के कुएँ के अन्दर जाने के लिए हम टिकिट लेकर गए। तो हमने देखा कि एक कुएँ के अन्दर तीन मोटर-साइकिल व एक जीप चलाने वाले लोग आ गए। वे गाड़ी चलाने लग गए। वे गिर भी नहीं रहे थे। और मैंने वहाँ बड़े-बड़े झूले और बहुत से खिलौने भी देखे। उस दिन से आज तक वह मेला लग रहा है।

● प्रकाश वर्मा, छठवीं, देवास, म.प्र.

एक पेड़ की क्या कीमत है?

रेक्स डी रोज़ारियो



सवाल तो सचमुच बहुत गम्भीर है। एक पेड़ की आखिर क्या कीमत है? पर कीमत का अंदाज़ा लगाना इस बात पर निर्भर करता है कि यह काम करने वाला कौन है। और वह पेड़ को किस नज़रिए से देखता है। एक व्यापारी पेड़ की कीमत उसकी लकड़ी के आधार पर तय करेगा। लकड़ी किस प्रकार की है? किस काम में आएगी? उसे बाज़ार में बेचने पर क्या दाम मिलेगा? इत्यादि।

दूसरी तरफ एक किसान यह देखता है कि साल भर में पेड़ कितने फल देता है, और कितने वर्षों तक फल देता रहेगा। और फिर पत्तियाँ किस काम आएँगी? ढोरों के चारे के रूप में या फिर खाद बनाने में?

इस सबसे अलग एक बच्चा शायद यह सोचेगा कि कड़क धूप में पेड़ की छाया में बड़ा आनन्द आता है। उसका फल कितना मीठा है। उसके फूलों की सुगंध कितनी मस्त है। उसे खूब मज़ा आता है पेड़ की डालों पर चढ़ना और झूले झूलना। तो इन सबकी कीमत क्या है? बच्चों की खुशी की क्या कीमत है? मुस्कुराहट की क्या कीमत है?

एक और नज़रिया है पेड़ों को देखने का। न केवल पेड़ बल्कि पूरे जैव मण्डल को देखने का, जिसमें पेड़ तो सिर्फ एक हिस्सा भर है। जैव मण्डल यानी? यानी सारे जीते-जागते पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, कीड़े-मकोड़े, इन्सान आदि सबको मिलाकर जो तंत्र है, वही। और इन्हें एक और तरह से देखने का यह नज़रिया है किसी पर्यावरणविद का। वह देखता है कि जैव मण्डल से पृथ्वी को क्या फायदा होता है? मानव को क्या फायदा होता है?

मान लो कहीं एक घना जंगल है तो जंगल के पेड़-पौधों, जानवरों का आबोहवा पर क्या प्रभाव पड़ता है? वायुमण्डल पर क्या प्रभाव पड़ता है?

हाँ, जंगल के पेड़ों से बहुत फायदा होता है। कहा जाता है, तुमने भी पढ़ा-सुना होगा कि पेड़ वायु

को शुद्ध बनाते हैं। वे प्रकाश संश्लेषण (पौधों द्वारा भोजन बनाने की क्रिया) में कार्बन डाइ-ऑक्साइड को सोखते हैं और हवा में ऑक्सीजन छोड़ते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि वायुमण्डल में कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा हद से ज़्यादा बढ़ रही है। खासकर फैक्ट्रियों में ईंधन के जलाने से। यहाँ तक कि पृथ्वी का तापमान भी बढ़ रहा है। उनका कहना है कि एक-दो डिग्री तापमान बढ़ने से ध्रुवों की बर्फ पिघलने लगेगी और पिघली बर्फ पानी बनकर समुद्र में मिलेगी। फलस्वरूप समुद्र की सतह एक दो फुट ऊँची उठ जाएगी। और जब यह होगा तब समुद्र तट पर बसे अनेक शहरों की बस्तियाँ डूब जाएँगी।

वैज्ञानिक कहते हैं कि वायुमणडल पर असर पड़ने से बारिश का चक्र भी प्रभावित होगा। जो मानसून की बारिश है, उस पर भी प्रभाव पड़ेगा। तो जैव मण्डल बचाकर रखना अत्यंत ज़रूरी है।

कई सरकारों का कहना है कि हम पेड़ काटेंगे, क्योंकि समाज को लकड़ी की सख्त ज़रूरत है। पर हम उनके बदले नए पेड़ भी लगाएँगे। आज भी कई इलाकों में ऐसे ही पेड़ लगाने की प्रक्रिया चल रही है। पर मानव द्वारा लगाए वन और प्राकृतिक वन में बहुत-से खास अंतर होते हैं।



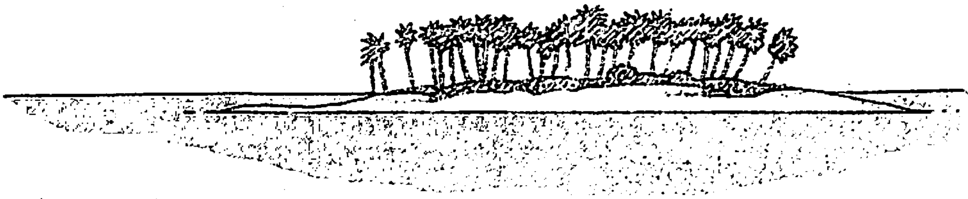
पहला तो यह कि अक्सर ऐसे गिने-चुने पेड़ लगाए जाते हैं जो उपयोगी हैं और 'उपयोगी' का मतलब है व्यावसायिक तौर पर उपयोगी। वे पेड़ जिनसे आमदनी हो सके। और गिने-चुने किस्म



के पेड़ लगाने से वह प्राकृतिक जैव मण्डल या प्राकृतवास तो वापस नहीं आ सकता न, जो नष्ट किया गया है। उसमें जो जानवर होंगे, जो कीड़े मकोड़े होंगे, सभी भिन्न होंगे।

हाल ही में इंगलैण्ड व संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक और मानव द्वारा निर्मित प्राकृतवास की तुलना की। अपने शोध कार्य के दौरान उन्होंने यह हिसाब भी लगाया कि प्राकृतिक तथा मानव रचित जैव मण्डल का मूल्य क्या है? वन्य स्थलों के संरक्षण से हमें कितने रुपयों का लाभ होता है?

उनका कहना है कि जैव मण्डल के विनाश का सालाना नुकसान लगभग 250 बिलियन या



125 अरब रुपए होता है। यानी कि 125,000,000,000 रुपए!

इन वैज्ञानिकों ने यह भी कहा कि किसी भी जैव मण्डल का आर्थिक लाभ कई मायनों में आँका जा सकता है – जैसे मौसम के उतार-चढ़ाव को बहुत तीखा नहीं होने देना, मिट्टी का निर्माण करना, पानी सोखकर उसे आगे के लिए बचाकर रखना, टिकाऊ फसलें व जानवर।

पर इन लाभों का मूल्य लगाना आसान नहीं है। क्योंकि पेड़ों द्वारा दी जाने वाली इन व ऐसी ही दूसरी सेवाओं की बिक्री नहीं हो सकती जैसा कि व्यापार में होता है। पर अर्थशास्त्री इन गैर बाज़ारी सेवाओं का मूल्य भी माप लेते हैं। इसके लिए वे कई अलग-अलग तरीके अपनाते हैं। जैसे कि अगर कहीं कोई प्राकृतिक जंगल या प्राकृतवास नष्ट हो गया हो तो उसकी जगह नए प्राकृतवास को स्थापित करने में क्या कीमत चुकानी पड़ेगी। या लोग उस प्राकृतवास के लिए कितना पैसा खर्च करने के लिए तैयार हैं। वैज्ञानिकों ने पाँच परिवर्तित जैव मण्डलों का अध्ययन किया।

1) मलेशिया का एक ऊष्णकटिबंधीय वन जिसके सारे पेड़ व्यावसायिक कारणों से कट चुके थे।
2) छोटे किसानों व व्यावसायिक बागानों हेतु कट चुका कैमरून का एक ऊष्णकटिबंधीय वन ।
3) थाइलैण्ड का एक मैंग्रोव क्षेत्र (दलदली जंगल) जो झींगा उत्पादन के लिए परिवर्तित किया गया था।
4) कनाडा का एक दलदली क्षेत्र जो खेती के लिए सुखाया गया था और,
5) फिलीपीन्स का एक मूँगा क्षेत्र जो मछली पकड़ने हेतु बारूद से उड़ाया गया था।

उनका कहना है कि इस तरह के बदलाव से जैव मण्डल का आर्थिक मूल्य कहीं 14 प्रतिशत तो कहीं 75 प्रतिशत तक घट जाता है – यानी औसतन 45 से 50 प्रतिशत।

उन्होंने पाया कि आँधी और बाढ़ नियंत्रण, वायुमण्डल से कार्बन डाइ-ऑक्साइड को सोखना, शिकार, पर्यटन आदि सेवाओं के कारण जो नुकसान होता है वह इनके कारण बदली हुई स्थिति से प्राप्त आर्थिक लाभ से कई गुना ज़्यादा है। उनका यह भी कहना है कि पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों के माल और सेवाओं से जो लाभ मिल सकता है, वह उनके परिवर्तन से प्राप्त फायदों से लगभग 4,400 बिलियन (220 नील रुपए) ज़्यादा है। यानी एक रुपए का फायदा हुआ तो उसके कारण ही 100 रुपए का नुकसान!

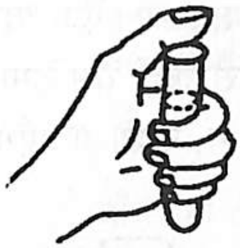
एक बात और, आज दुनिया में हम अस्त्र-शस्त्र पर जितना पैसा खर्च करते हैं, उसके सिर्फ छठवें हिस्से से पृथ्वी की प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण कर सकते हैं।

पर सोचने की बात तो यह है कि इस पर सोचेगा कौन? कौन तय करेगा कि हमारे जीने के लिए बम-बारूद-बन्दूक ज़्यादा ज़रूरी है या पेड़-पौधे?

चित्र सौजन्य : देश का पर्यावरण

बोतल में परखनली

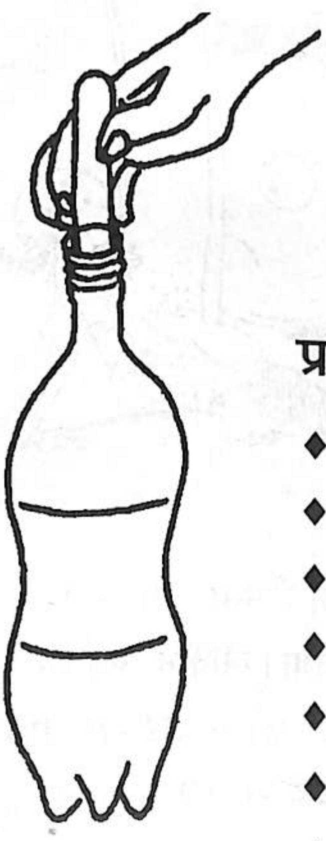
आजकल बाज़ार में कई तरह के ठण्डे पेय प्लास्टिक की बोतलों में मिलते हैं। ऐसे ही किसी पेय की खाली बोतल और एक परखनली की मदद से हम एक मज़ेदार प्रयोग कर सकते हैं।



चित्र 1

करना यह है......

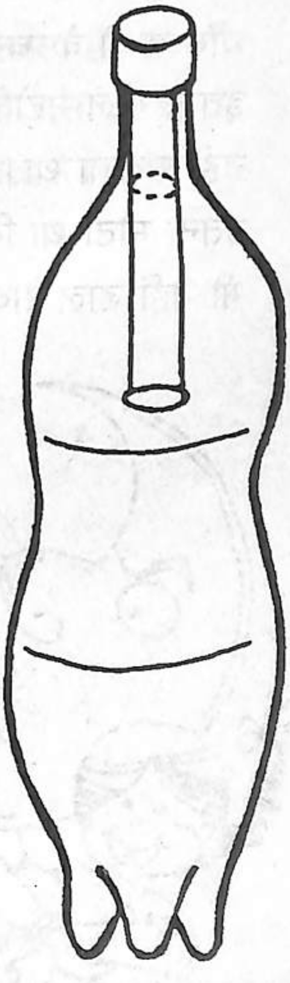
प्लास्टिक की बोतल को पानी से पूरा भरकर अँगूठे से दबा लो। अब परखनली को भी पानी से तीन चौथाई भर लो (चित्र 1)। अँगूठे से उसका मुँह बंद करके मुँह की तरफ से बोतल में डालो (चित्र 2)। तुम देखोगे परखनली बोतल के पानी के तल पर ही टँगी रहती है। बोतल का ढक्कन बंद कर दो (चित्र 3)।



चित्र 2

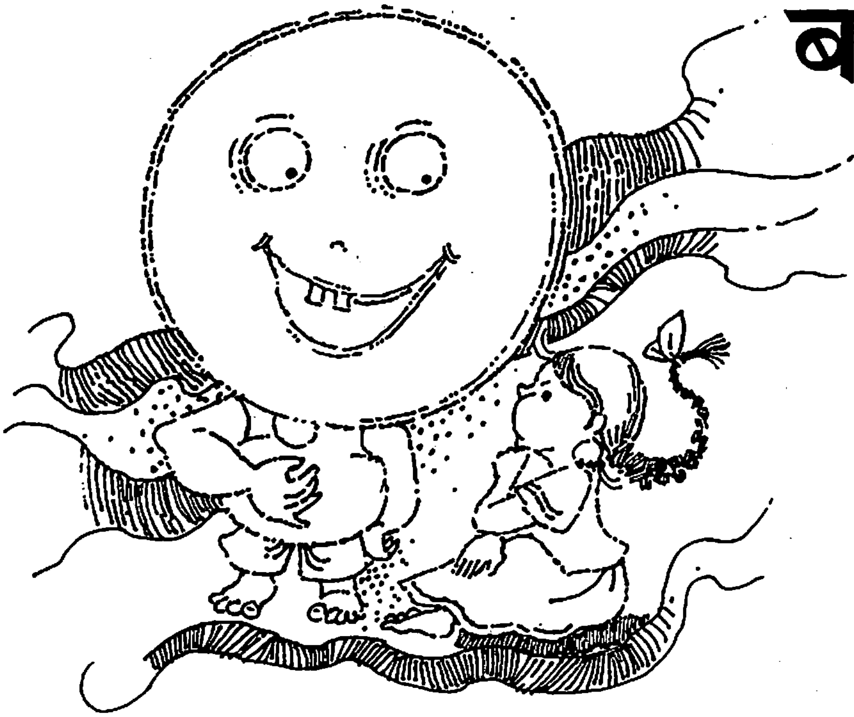
प्रयोग....

- बोतल को बीच में पकड़कर दबाओ।
- दबाव धीरे-धीरे बढ़ाते जाओ।
- क्या हुआ....?
- अब धीरे-धीरे पकड़ ढीली करते जाओ।
- क्या हुआ?
- क्या तुम बता सकते हो कि ऐसा क्यों हुआ?
- तुम अपने अवलोकन हमें ज़रूर भेजना।



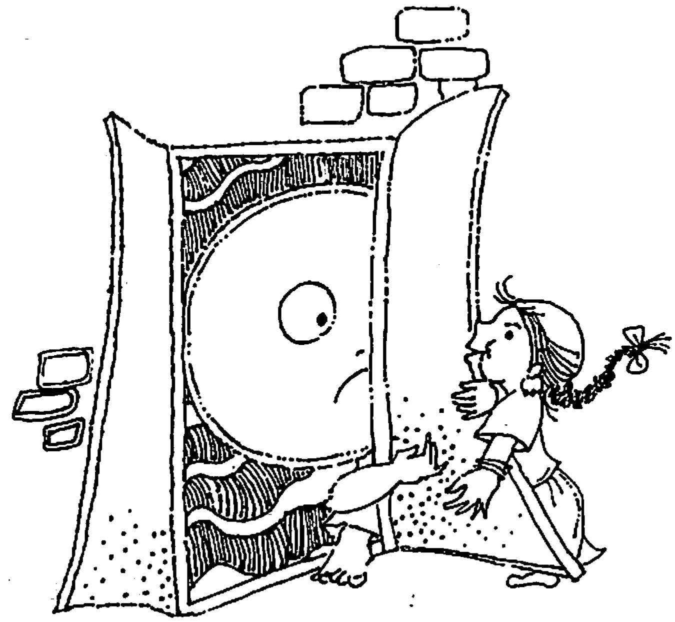
चित्र 3

बन्नो का चाँद



उन दिनों चाँद हमसे इतनी दूर नहीं रहता था। न ही उसका रंग इतना सफेद था। उन दिनों चाँद की बन्नो से खूब दोस्ती थी। बन्नो को भी चाँद खूब पसंद था। एक दिन उसने चाँद से कहा तुम हमारे घर आओ न, खुशी मनाएँगे।

चाँद बन्नो के घर पहुँच गया। लेकिन वो इतना गोल मटोल था कि दरवाज़े से घुस नहीं सकता था। बन्नो हँसने लगी। चाँद इतना मोटा था कि वो उसके गले में हाथ भी नहीं डाल सकती थी।





चाँद को बन्नो का हँसना बुरा लगा। वो एकदम पतला हो गया। लेकिन अब बन्नो हँसते-हँसते उसके गले में ज़रा-सा हाथ डालकर टिकी तो वो धड़ से गिर पड़ा। बन्नो फिर हँसने लगी।



गिरने से चाँद पर मिट्टी लग गई। वैसे भी उसका रंग सफेद तो था नहीं। अब अँधेरे में और भी दिखना बंद हो गया। बन्नो खूब हँसी। हँसती रही। 'मेरे मोटे राजा, मेरे काले राजा' कहती रही।

चाँद वहाँ से चला गया। बहुत ऊपर, बहुत दूर। रास्ते में उसे एक ऊँचे पहाड़ ने अपनी बर्फ से ढँककर सफेद कर दिया। लेकिन चाँद चलता ही रहा, जब तक वह बहुत ऊपर नहीं पहुँच गया। उसकी बर्फ अभी उस पर है। वह कभी मोटा होता है, फिर कुछ सोचकर कुछ पतला हो जाता है। लेकिन वह ऊपर ही रहता है। वह फिर कभी नीचे नहीं आया।



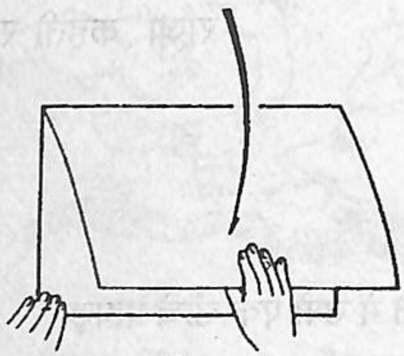
यह कहानी एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए तैयार किताब 'खुशी खुशी' से ली गई है

चित्र : धनंजय

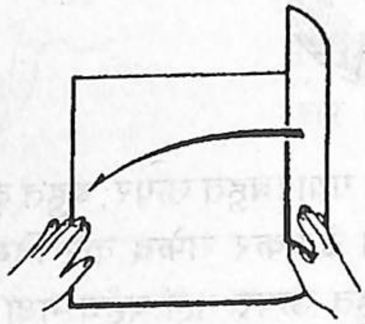
टोपी



काम शुरू करने के लिए एक पुराना अखबार लो जो दो पन्ने का हो।

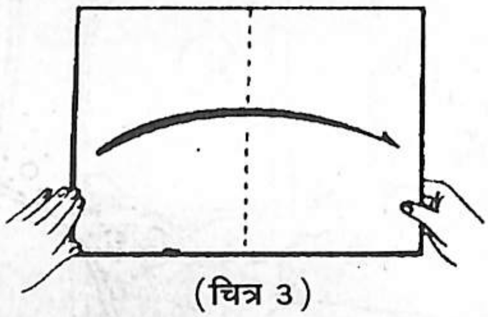


(चित्र 1)



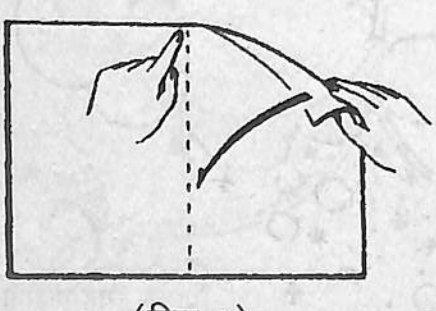
(चित्र 2)

1. अखबार के बीच में जहाँ पहले से मोड़ बना है, वहाँ से मोड़ लो। इसे इस तरह अपने सामने रखो कि मुड़ा हिस्सा तुमसे दूर रहे और खुला हिस्सा तुम्हारी तरफ। (चित्र 1)



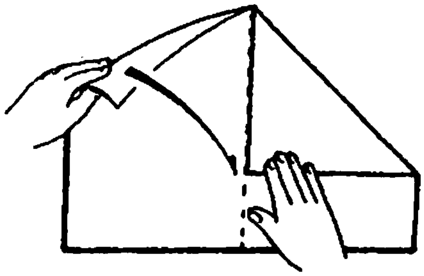
(चित्र 3)

2. इस कागज़ को एक बार और बीच से मोड़कर मोड़ खोल लो। (चित्र 2 और 3)



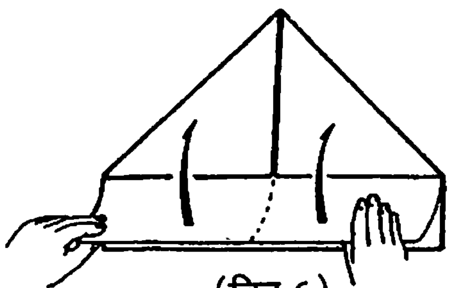
(चित्र 4)

3. अब चित्र में दिखाए अनुसार ऊपर वाले दाएँ सिरे को बीच की टूटी रेखा पर लाते हुए मोड़ बना लो। (चित्र 4)

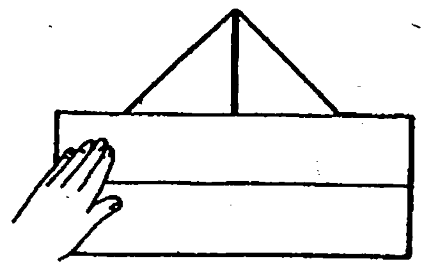


(चित्र 5)

4. यही क्रिया ऊपरी बाएँ सिरे पर भी करनी है। (चित्र 5)। इस तरह एक घर जैसी आकृति बन जाएगी जो एक त्रिभुज और उसके नीचे की आयताकार पट्टी से बनी हुई होगी। (चित्र 6)



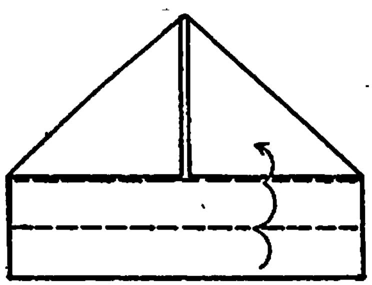
(चित्र 6)



(चित्र 7)

5. घर वाले त्रिभुज के नीचे का आयत दो पलड़ों से बना होगा! है न। इनमें से ऊपर वाले पलड़े को चित्र के हिसाब से ऊपर की ओर मोड़ो। (चित्र 7)

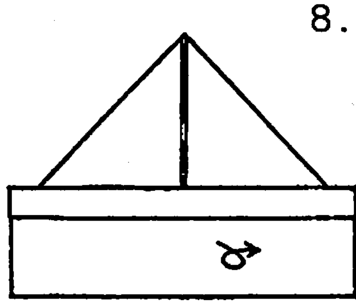
6. मोड़ को अच्छी तरह से दबाकर खोल लो।



(चित्र 8)

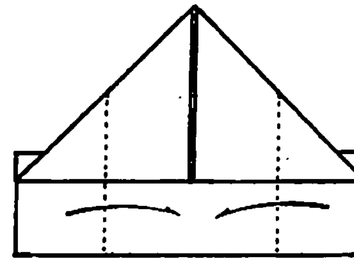
7. अब इस पतली लम्बी पट्टी को चित्र में दिखाए अनुसार दो बार मोड़ो ताकि मुड़ी हुई पट्टी त्रिभुज के ऊपर चढ़ जाए। (चित्र 8)

8. इस आकृति को पलट लो।

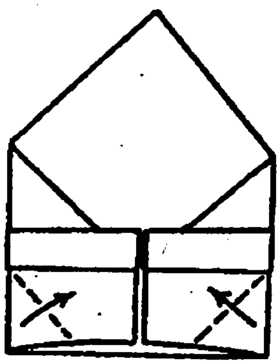


(चित्र 9)

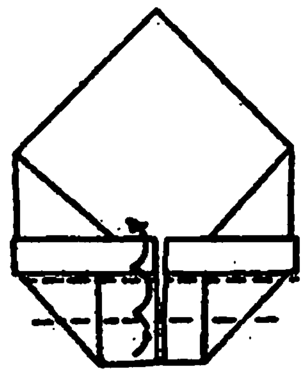
9. इस तरफ भी त्रिभुज के नीचे की आयताकार पट्टी दिख रही होगी। यहाँ से चित्रों को कुछ बड़ा करके दिखाया है। आकृति के दाएँ-बाएँ सिरों को टूटी रेखाओं पर से मोड़ते हुए बीच तक ले आओ। (चित्र 10)



(चित्र 10)

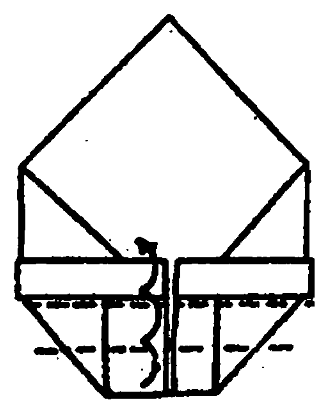


(चित्र 11)



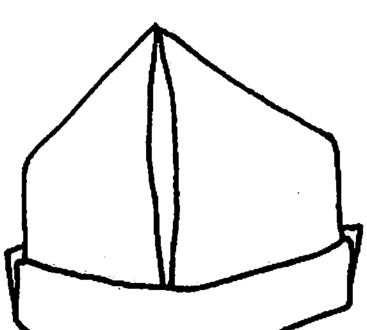
(चित्र 12)

10. चित्र 11 जैसी आकृति मिली? इसके नीचे की तरफ के आयताकार हिस्से के कोनों को मोड़ लो।



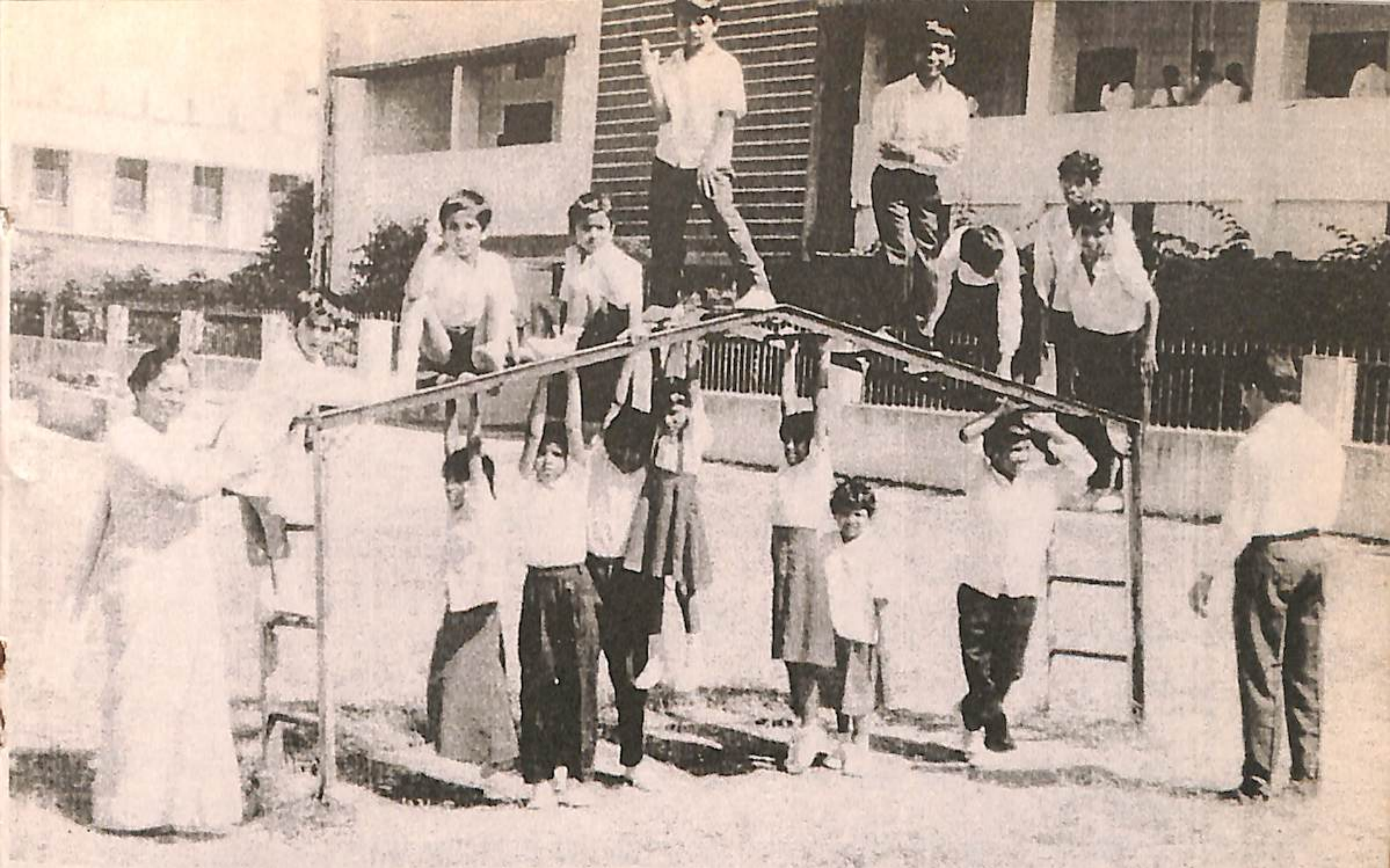
(चित्र 13)

11. फिर इस पट्टी को भी दो बार टूटी रेखाओं पर से ऊपर की ओर मोड़ना है। ठीक वैसे ही जैसे तुमने चित्र 8 में किया था। (चित्र 12)



12. इस मुड़े हुए भाग के नीचे देखोगे तो तुम्हें दाएँ-बाएँ दो जेब दिखाई देंगे। बस अब पहले मोड़ के हिस्से को इन जेबों में डाल दो ताकि वो निकल न पाए।

13. अब पहनकर देखो, कैसी लगी टोपी।



एक खास स्कूल ....

आशा निकेतन हायर सेकेण्डरी स्कूल भोपाल का एक खास स्कूल है। करीब ढाई सौ बच्चे यहाँ मौजमस्ती के साथ पढ़ाई करते हैं। शिक्षक इतने अच्छे हैं, माहौल इतना दोस्ताना है कि उमर के अलावा शायद और कोई चीज़ नहीं है जिससे तुम बच्चों के झुण्ड में टीचर को पहचान पाओ।

इस स्कूल में ऐसे बच्चे पढ़ते हैं जो हमारी तरह बोल और सुन नहीं सकते। उनसे बात करते हुए हो सकता है तुम्हें जुबान इतनी ज़रूरी चीज़ न लगे। उनके हाथ, उनकी आँखों ने उनकी इस कमी को पूरा कर दिया है। तुम्हारे होंठों की एक हरकत उनकी आँखों से बच नहीं सकती। स्कूल में भी इसी बात पर ज़ोर दिया जाता है।

कोशलीन जो पिछले तीन-चार साल से इसी स्कूल में पढ़ा रहे हैं कहते हैं.... 'हमारी कोशिश रहती है कि बच्चे होंठों की हरकतों को पढ़ना सीखें। हाथों के संकेत तो मैंने बच्चों के बीच रहकर सीखे हैं।'

कोशलीन लखनऊ के रहने वाले हैं, ... 'पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं नौकरी की तलाश में था। इस तरह के स्कूल में पढ़ाने के लिए मैंने एक साल की ट्रेनिंग ली। उन दिनों यह काम बस नौकरी भर था पर आज बात दूसरी है। शायद ही ये स्कूल अब कभी छूट पाए।'

यह स्कूल 1969 में शुरू हुआ था। देश के हर हिस्से के बच्चे यहाँ पढ़ते हैं। यहाँ हिन्दी माध्यम से पढ़ाई होती है। चार साल की उमर पार कर चुका कोई भी बच्चा दाखिला ले सकता है। के. जी. वन से लेकर बारहवीं तक की पढ़ाई यहाँ होती है। ये तो तुम जानते ही होगे कि ये बच्चे आम बच्चों के साथ परीक्षा देते हैं। पिछले कई वर्षों से यहाँ बोर्ड की परीक्षाओं में एक भी बच्चा फेल नहीं हुआ है। बस एक ही चीज़ है जिसका मलाल यहाँ के पढ़ने वालों को है। वो यह कि यहाँ सिर्फ कला विषयों (हिन्दी साहित्य, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि) से ही पढ़ाई कर सकते हैं। हालाँकि स्कूल की कोशिश है कि यहाँ दूसरे विषयों की पढ़ाई भी शुरू की जा सके।

सुबह के साढ़े दस बजे यानी आधी छुट्टी और पूरी मस्ती का माहौल! मस्ती के इसी दौर में हमने कुछ बच्चों से बातचीत की।

सबसे पहले तीसरी में पढ़ रही मनु से बातचीत हुई। मनु का घर गुड़गाँव में है। इस स्कूल में उसे साल भर ही हुआ है। दिल्ली के स्कूल के दिनों के बारे में वो कहती है, 'बड़े बोरियत के दिन थे। यहाँ की बात कुछ और है, खूब मज़ा है यहाँ! फिर भी गर्मियों की छुट्टियों का इंतज़ार रहता है। शायद इसलिए कि मम्मी, पापा और भाई के साथ रहने को मिलता है।'

मनु बड़ी होकर टीचर बनना चाहती है, बिल्कुल अपनी मेडम जैसी! 'दोस्तों से गपशप में खूब मज़ा आता है। आपको नहीं आता?' उसने मुझसे पूछा।

हमारी बातचीत में और लोग भी शामिल हो गए। ओमप्रकाश ने इशारे से पूछा कि क्या मैं वहाँ पढ़ने आया हूँ, मैंने कहा 'नहीं।'

'तो फिर पढ़ाने आए होंगे?'

मैंने फिर कहा, 'नहीं, मैं तो बस तुमसे बात करने, दोस्ती करने आया हूँ।'

उसने झट-से हाथ बढ़ा दिया। ओमप्रकाश भोपाल के ही रहने वाले हैं। यानी वे रोज़ घर से स्कूल आया-जाया करते हैं। इस स्कूल से बारहवीं पास करने के बाद वे हैदराबाद से बी.कॉम. करेंगे या फिर आई. टी. आई. करेंगे। कराटे उन्हें बहुत पसंद है। उन्होंने इस बार राज्य स्तरीय मुकाबले में कराटे का स्वर्ण पदक भी जीता। कराटे के अलावा उन्हें चित्र बनाने का भी शौक है। यूँ तो ओमप्रकाश को सारे टीचर पसंद हैं पर कोशलीन सर से वो बहुत प्रभावित हैं ... 'पता नहीं क्यों पर दो लोग मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। एक तो कोशलीन सर और दूसरा मेरा दोस्त शिवमूरत।' वो हाथ से बताता भी है कि शिवमूरत कैसे हर गेंद पर छक्का लगाता है।



इसके बाद दीपमाला ने भी अपने अनुभव हमसे बाँटे। दीपमाला यहाँ दस-बारह साल से हैं। वो चार साल की उमर में यहाँ आई थीं। शुरू के साल कुछ बुरे कटे लेकिन उसके बाद सब ठीक हो गया। अब तो घर पर गर्मियों की छुट्टियाँ भी मुश्किल से कटती हैं। एक दो दिन तो ठीक लगता है, इसके बाद लगता है कि कब छुट्टियाँ खत्म हों। दीपमाला ऐसे ही किसी स्कूल में पढ़ाना चाहती हैं। फिर कुछ सोचकर वो संकेत से कहती हैं, 'बाकी ऊपर वाले की मर्ज़ी!'



आशीष से भी हमारी खूब बातचीत हुई। वो भोपाल से अंदाज़न पाँच सौ किलोमीटर दूर उमरिया में रहते हैं। उन्हें अपना गाँव बहुत पसंद है। इसका कारण वो बताते हैं, 'मुझे खेती करना बहुत अच्छा लगता है और वहाँ सब खेती करते हैं इसलिए! मैं भी खेती करूँगा,स्कूली पढ़ाई पूरी करने के बाद! जब मैं चार साल की उमर में यहाँ आया था तो रोज़मेरी मेडम पपीता, आम पढ़ाती थीं।' भोपाल का टी टी नगर उन्हें बहुत पसंद है।

कई और बच्चों से भी हमारी बात हुई। सब के सब जोश से भरे, हाज़िर जवाब और बात-बात पर हँसने वाले!..............मुश्किलों को हँसी में ढालते इन बच्चों को सलाम!

रपट : सुशील शुक्ल

माथापच्ची नवम्बर अंक के हल

1.



2. 296
3. 'क' नम्बर वाला
6. इस सवाल में एक गलती रह गई थी। 4 बार 4 का उपयोग कर 9 लाना है, 6 नहीं। इसका हल है – $4/4 + 4 + 4$
7. 6 बजकर 19 मिनिट 52 सेकेण्ड

चित्र पहेली हल

		रे	ल	प	ट	री		ला
ब	र	खा			ह		न	ल
क			अ		नी	म		कि
री	छ		ना	ग		ग	म	ला
	पा		र		म		छ	
ब	क	सा		खा	ट		ली	ची
र		त	वा		का			र
ग	धा		ह			ता	प	ना
द		क	न	ख	जू	रा		

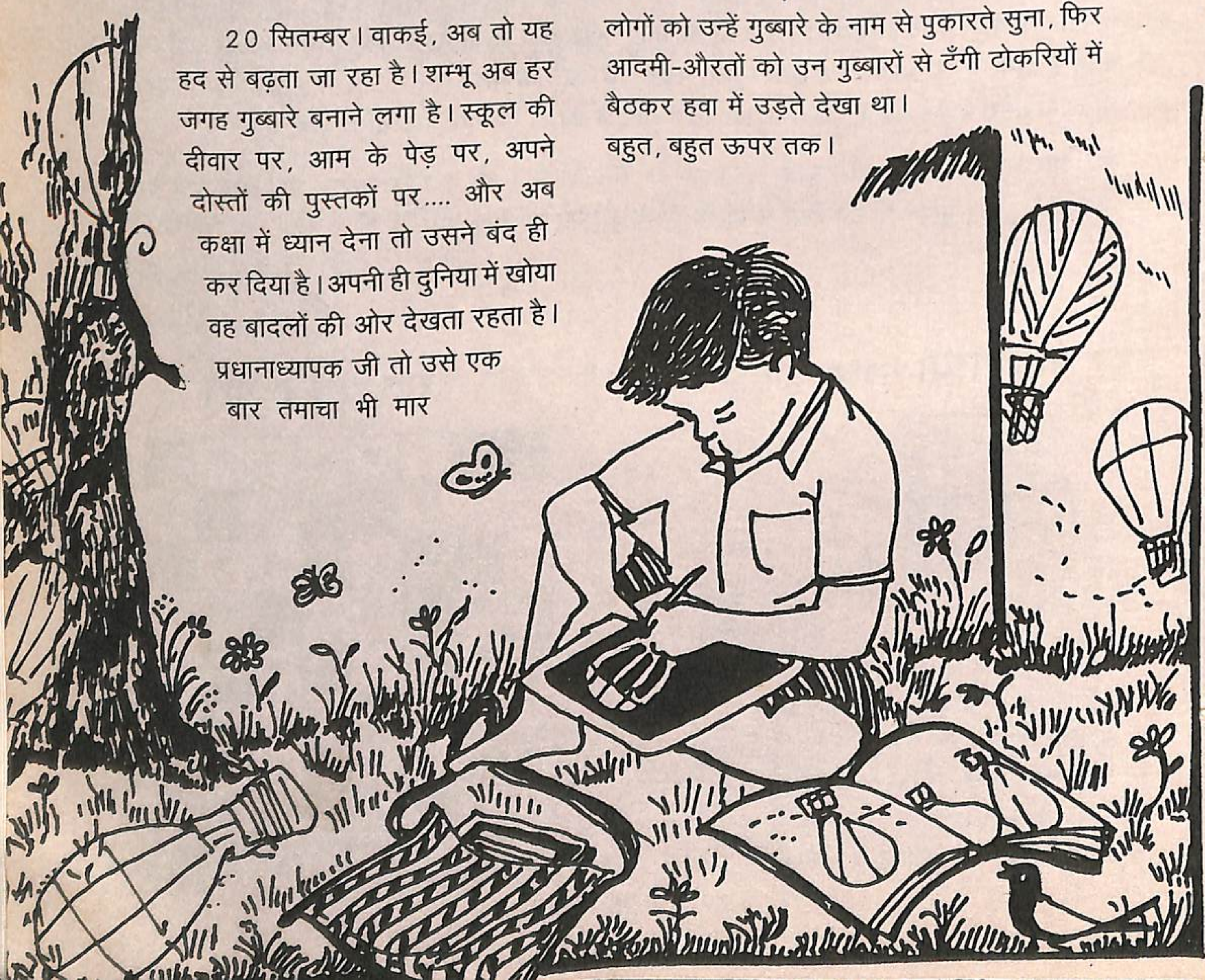
सौ गज़ हवा में ऊपर

सुबीर शुक्ला

15 सितम्बर। पता नहीं शम्भू को क्या हो गया है। कुछ हफ्तों पहले तक तो ठीक था। फिर वह अपने माता-पिता के साथ मज़दूरी के लिए शहर गया। लेकिन जब से गाँव लौटा है, तब से बड़ा अजीब व्यवहार कर रहा है। पहले उसकी स्लेट, ट्रकों के चित्रों से भरी होती थी, लेकिन आजकल वह किसी और ही तरह के चित्र बना रहा है। कुछ-कुछ जो गुब्बारे की तरह दिखता है। ऊपर से गोल गेंद की तरह और नीचे कुछ लकीरें। पर क्यों?

20 सितम्बर। वाकई, अब तो यह हद से बढ़ता जा रहा है। शम्भू अब हर जगह गुब्बारे बनाने लगा है। स्कूल की दीवार पर, आम के पेड़ पर, अपने दोस्तों की पुस्तकों पर.... और अब कक्षा में ध्यान देना तो उसने बंद ही कर दिया है। अपनी ही दुनिया में खोया वह बादलों की ओर देखता रहता है। प्रधानाध्यापक जी तो उसे एक बार तमाचा भी मार चुके हैं। 'तुम लड़के को अनुशासन में क्यों नहीं रखते हो, जब देखो इधर-उधर घूमता रहता है।' ऐसा नहीं है कि मैंने उस पर हाथ नहीं उठाया, पर आखिर एक छोटे लड़के को कोई कितना मार सकता है?

21 सितम्बर। आज शम्भू से पूछा कि तू किस चीज़ का चित्र बना रहा है। तो उसने कहा गुब्बारे का। शहर में उसके माता-पिता को एक बड़े, खुले मैदान के पास काम मिला था। एक दिन मैदान में बहुत सारी गोल-गोल और बड़ी सी चीज़ें दिखाई दी थीं। उसने लोगों को उन्हें गुब्बारे के नाम से पुकारते सुना, फिर आदमी-औरतों को उन गुब्बारों से टँगी टोकरियों में बैठकर हवा में उड़ते देखा था।
बहुत, बहुत ऊपर तक।



आप देखिएगा, मास्साब एक दिन मैं भी हवा में ऐसे ही उडूँगा। बेचारा शम्भू! उसे वाकई विश्वास है कि वह उड़ेगा। होना तो यह है कि वह भी अपने माँ-बाप की तरह पी डब्ल्यू डी या फॉरेस्ट वालों के लिए मज़दूरी करेगा।

27 सितम्बर। शम्भू का पिता आज आया था। कह रहा था। उसका लड़का कुछ दिनों के लिए स्कूल नहीं आएगा। क्यों? अरे बीमार है ना मास्साब! बुखार में बड़बड़ाता रहता है कुछ-कुछ, बहुत-बहुत ऊपर उड़ने के बारे में।

5 अक्टूबर। आज शम्भू फिर स्कूल आया था। चेहरे का रंग फीका था और बड़ा चुपचाप-सा था। दोस्तों के बीच भाग-भागकर गुब्बारों के चित्र देखने का काम बिल्कुल बंद। ज़्यादा समय तो दीवार के सहारे टिका बैठा रहा। प्रधानाध्यापक जी ने भी उसे अनुशासन में रखने के बारे में कुछ नहीं कहा है।

17 अक्टूबर। विश्वास नहीं होता! आज यह हुआ... वाकई में हुआ। सुबह से आसमान में हल्के-हल्के बादल थे। दोपहर की छुट्टी के पहले मैंने बाहर झाँका, तो ऐसा लगा कि बारिश हो सकती है। घने-घने बादल बेमौसम ही गाँव के बाहर वाले पहाड़ों के ऊपर उमड़ रहे थे। लेकिन जिस चीज़ ने मेरा ध्यान खींचा वह था काले बादलों के बीच एक छोटा-सा लाल और पीला निशान। धीरे-धीरे वह निशान बड़ा होता गया और देखते ही देखते हमारी आँखों के सामने एक शानदार चमचमाता गुब्बारा उड़ रहा था।

हो! पल भर में मेरे पीछे से उमड़कर पूरा स्कूल बाहर निकल चुका था। गुब्बारे की ओर घूरते और इशारा करते हुए। 'गुब्बारा! गुब्बारा!' सब चीखे और शम्भू की ओर देखने लगे। शम्भू एकदम शांत खड़ा था। ज़रा भी उत्तेजित नहीं। जैसे कि एक गुब्बारे का सिलवाड़ी पहुँच जाना आम बात हो। फिर आश्चर्य की बात गुब्बारा नीचे की ओर उतरने लगा। अब हम उसमें एक आदमी देख सकते थे। वह कभी रस्सियों को खींचता, कभी नीचे की ओर झाँकता....। वह पहाड़ पार कर चुका था और सीधे उसी खेत की ओर बढ़ रहा था जिसे गनपत ने इस साल परती छोड़ दिया था। तो ऐसे उतरता है गुब्बारा ज़मीन पर, मैंने सोचा।



अचानक गुब्बारा थोड़ा झुका! 'अरे महुए से भिड़ेगा' सब चिल्ला उठे, क्योंकि ठीक उसके रास्ते में खड़ा था गाँव का सबसे बड़ा महुए का पेड़। गुब्बारे से लटके खटोले में खड़े आदमी ने तेजी से कुछ किया और पेड़ तक पहुँचते ही गुब्बारा ऊपर उठा। लेकिन फिर भी गुब्बारा पूरी तरह बच नहीं पाया। उससे लटकी एक रस्सी बड़े महुए की ऊपरी टहनियों में जा उलझी। क्षण भर में गुब्बारा, महुए से ऐसे बंध चुका था जैसे कोई बिदकता घोड़ा किसी खूँटे से। गुब्बारे का खटोला घूमकर एक छोर से ऊपर उठ चुका था। उसमें खड़ा आदमी (अब हमने देखा कि उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी) बहुत चिंतित नज़र आ रहा था।

'ठीक ठाक तो हो?' पूरन दादा ने नीचे से पूछा।

'मैं तो ठीक हूँ, गुब्बारा है जो देर तक ठीक रहने वाला नहीं है।'

'क्या?'

'जल्दी से रस्सी काटिए नहीं तो इस गुब्बारे का खोल फट जाएगा और यहीं खत्म हो जाएगी, कश्मीर से कन्याकुमारी तक मेरी उड़ान।'

हमने पेड़ पर अटकी रस्सी को ध्यान से देखा। पेड़ की सबसे ऊपर वाली शाखाएँ, जिन पर गुब्बारे की रस्सी फँसी थी, वहाँ पहुँचना काफी कठिन था। वे इतनी पतली थीं कि एक बच्चे का वज़न भी न सह सकतीं। और जैसा कि महुआ के पेड़ों पर अक्सर होता है, शाखें एकदम सीधी आसमान की ओर बढ़ रही थीं।

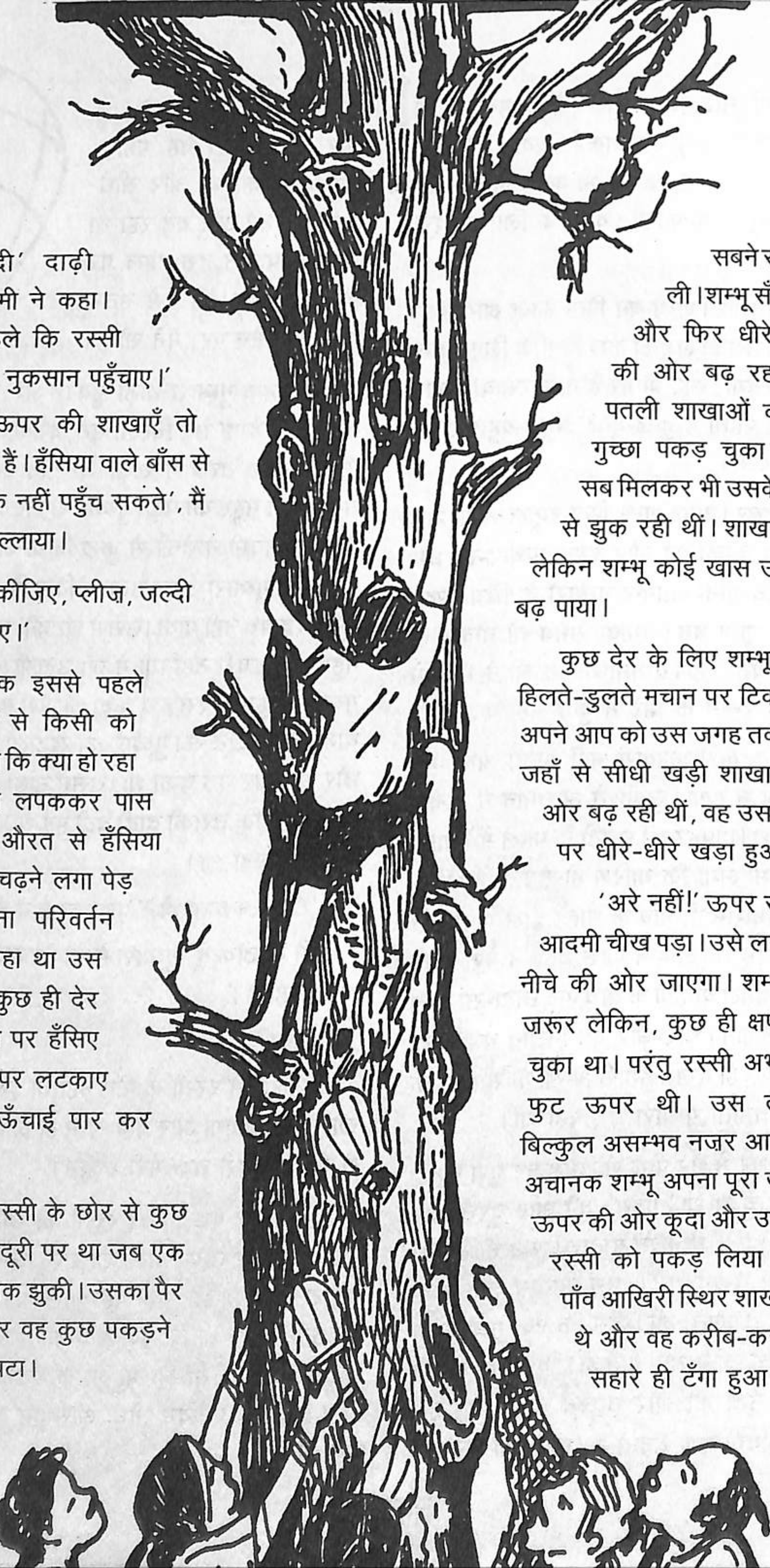
‘जल्दी’ दाढ़ी वाले आदमी ने कहा। ‘इससे पहले कि रस्सी गुब्बारे को नुकसान पहुँचाए।’

‘पर ऊपर की शाखाएँ तो बहुत ऊँची हैं। हँसिया वाले बाँस से भी उन तक नहीं पहुँच सकते’, मैं नीचे से चिल्लाया।

‘कुछ कीजिए, प्लीज़, जल्दी कुछ कीजिए।’

अचानक इससे पहले कि हम में से किसी को अंदाज़ होता कि क्या हो रहा है, शम्भू ने लपककर पास खड़ी एक औरत से हँसिया छीना और चढ़ने लगा पेड़ पर। कितना परिवर्तन नज़र आ रहा था उस लड़के में। कुछ ही देर में दाएँ हाथ पर हँसिए को सुतली पर लटकाए वह आधी ऊँचाई पार कर चुका था।

शम्भू रस्सी के छोर से कुछ ही फुट की दूरी पर था जब एक शाख अचानक झुकी। उसका पैर फिसला और वह कुछ पकड़ने के लिए झपटा।



‘ओह’ हम सबने राहत की साँस ली। शम्भू सँभल चुका था और फिर धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ रहा था। शम्भू पतली शाखाओं का एक पूरा गुच्छा पकड़ चुका था, लेकिन सब मिलकर भी उसके हल्के वज़न से झुक रही थीं। शाखाएँ टूटी नहीं, लेकिन शम्भू कोई खास ऊपर भी नहीं बढ़ पाया।

कुछ देर के लिए शम्भू वैसे ही उस हिलते-डुलते मचान पर टिका रहा। फिर अपने आप को उस जगह तक घसीटकर, जहाँ से सीधी खड़ी शाखाएँ ऊपर की ओर बढ़ रही थीं, वह उस झूलती डाल पर धीरे-धीरे खड़ा हुआ।

‘अरे नहीं!’ ऊपर से दाढ़ी वाला आदमी चीख पड़ा। उसे लगा शम्भू सीधे नीचे की ओर जाएगा। शम्भू डगमगाया ज़रूर लेकिन, कुछ ही क्षणों में सँभल चुका था। परंतु रस्सी अभी भी तीनेक फुट ऊपर थी। उस तक पहुँचना बिल्कुल असम्भव नज़र आ रहा था। पर अचानक शम्भू अपना पूरा ज़ोर लगाकर ऊपर की ओर कूदा और उसने झपटकर रस्सी को पकड़ लिया। अब उसके पाँव आखिरी स्थिर शाखा से हट चुके थे और वह करीब-करीब रस्सी के सहारे ही टँगा हुआ था।



'रस्सी को काटना नहीं। नहीं तो सीधे नीचे जाओगे।' ऊपर से दाढ़ी वाले आदमी ने आवाज़ दी।

'पागल थोड़े ही हूँ, जो रस्सी काटूँगा।' शम्भू की आवाज़ हम तक भी पहुँची। उसने एक हाथ से टँगे-टँगे ही दूसरे हाथ से हँसिया उठाया। ठक-ठक हँसिए के वार पड़े, रस्सी पर नहीं बल्कि उन पतली शाखाओं पर जिनमें रस्सी उलझी पड़ी थी। एक मिनट बाद हमने देखा कि गुब्बारा थोड़ा ऊपर-नीचे हुआ और फिर एक हल्के-से झटके के साथ शाखाओं से मुक्त होता हवा में ऊपर उठा। शम्भू रस्सी के सहारे गुब्बारे से लटका हुआ था।

'कस के पकड़े रहना।' दाढ़ी वाले आदमी ने उसे सचेत किया। फिर उसने इस कुशलता से धीरे-धीरे गुब्बारे को गनपत के खेत में उतारा कि शम्भू को एक झटका तक नहीं लगा।

18 अक्टूबर। पौ फटते ही हम उस खेत में वापस गए। 'भोर वाली उड़ान शम्भू के लिए', दाढ़ी वाले विशम्भर ने कहा। वह पूरे देश को पार करने वाली उड़ान पर था, तभी अचानक बिना किसी चेतावनी के मौसम खराब हो गया। उसे ज़बरदस्ती सिलवाड़ी में उतरना पड़ा।

शम्भू नहीं होता तो यहीं खत्म होती मेरी लम्बी उड़ान। इसीलिए भोर वाली ये उड़ान, खास उसके लिए।'

फिर उसने शम्भू को गुब्बारे से लटके खटोले में चढ़ने में मदद की। उसने कुछ रस्सियाँ खींची, कुछ को ऊपर-नीचे किया और हमसे उन पत्थरों को हटाने के लिए कहा जिनके सहारे गुब्बारा नीचे टिका हुआ था। फिर जैसे किसी जादुई चीज़ की तरह गुब्बारा ज़मीन से ऊपर उठा, महुए के ऊपर, भोर के लाल होते बादलों की ओर। थोड़ी देर में हमने ऊपर देखा तो, सौ गज़ हवा में ऊपर से शम्भू हाथ हिला रहा था।

सभी चित्र : विप्लव शशि

उई माँ !



उई माँ !
सरदी यूँ चुभती है
जैसे हो सुई माँ !!
सन सन सन चलती है
हवा बर्फ मलती है
ऐसे में गर्मी अब
देती है रुई माँ !
उई माँ !!



सीने में स्वेटर है
कानों में मफलर है
फिर भी काँप रहे
हालत ये हुई माँ !
उई माँ !!



काँप रहा जग सारा
नीचे जाता पारा
कोहरा वन आसमान से
शीत चुई माँ !!
उई माँ !!

शिवचरण चौहान

चित्र : संतोष श्रीवास्तव

थर्मामीटर की कहानी

सुशील जोशी

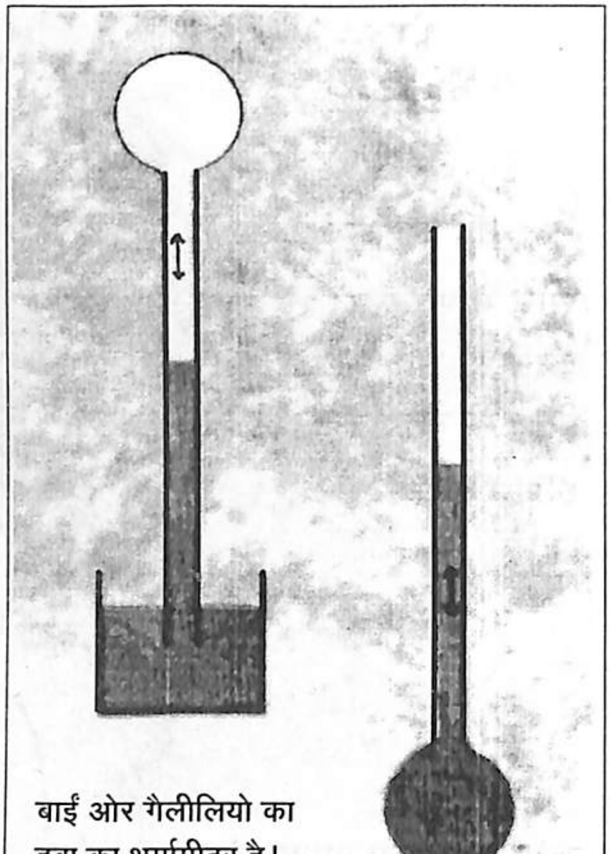
हवा के थर्मामीटर

पिछली बार हमने गैस थर्मामीटर के बारे में कुछ बातें की थीं। हमने देखा कि जब बल्ब को हाथ की गर्मी से गरम करके उसकी गर्दन को पानी में डुबाते हैं तो कुछ पानी गर्दन में चढ़ जाता है।

बात यहाँ आकर रुकी थी कि ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है कि गर्म करने पर हवा फैलती है और कुछ हवा बाहर निकल जाती है। जब इसी स्थिति में गर्दन को पानी में डुबा देते हैं और हाथों से गर्मी देना बन्द कर देते हैं तो अन्दर की हवा थोड़ी सिकुड़ती है और पानी ऊपर चढ़ जाता है। कहने का मतलब यह कि गर्मी पाकर हवा फैलती है। इस आधार पर तापमान नापा जा सकता है। देखें कैसे?

एक तरीका तो वही हो सकता है जो गैलीलियो ने अपनाया था। हर बार बल्ब को उस चीज़ के सम्पर्क में रखें जिसका तापमान नापना है। फिर बल्ब का तापमान कम किए बगैर गर्दन को पानी में डुबाएँ और देखें कि पानी कितना चढ़ा। गर्दन पर निशान भी लगाए जा सकते हैं। क्या तुम इस तरीके की व्यावहारिक दिक्कतें समझ सकते हो? शुक्र है कि इसी काम को करने का एक और तरीका भी है।

यदि हम हवा को गरम करें तो वह फैलती है। मगर यदि किसी तरह से हम हवा को फैलने न दें तो क्या होगा? जैसे गर्मियों के मौसम में

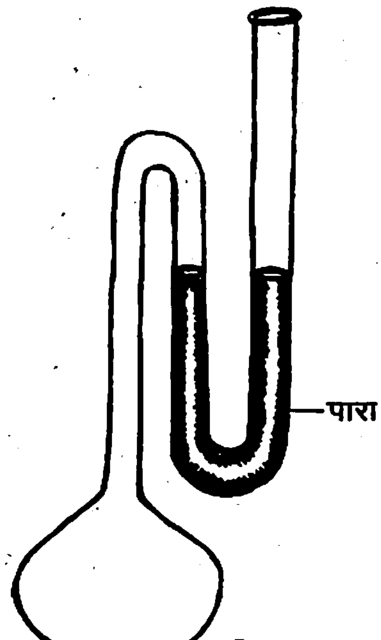


बाईं ओर गैलीलियो का हवा का थर्मामीटर है। इसमें फैलने और संकुचित होने वाला माध्यम हवा है। दाहिनी ओर इसी थर्मामीटर का बाद का स्वरूप है जिसमें फैलने और संकुचित होने वाला माध्यम तरल है।

सायकल ट्यूब में अक्सर होता है, हवा का दबाव बढ़ने लगेगा। यानी गरम करते हुए यदि हवा का आयतन न बढ़ने दिया जाए तो उसका दबाव बढ़ेगा। हम इस दबाव को नापकर भी तो तापमान का अन्दाज़ लगा सकते हैं।

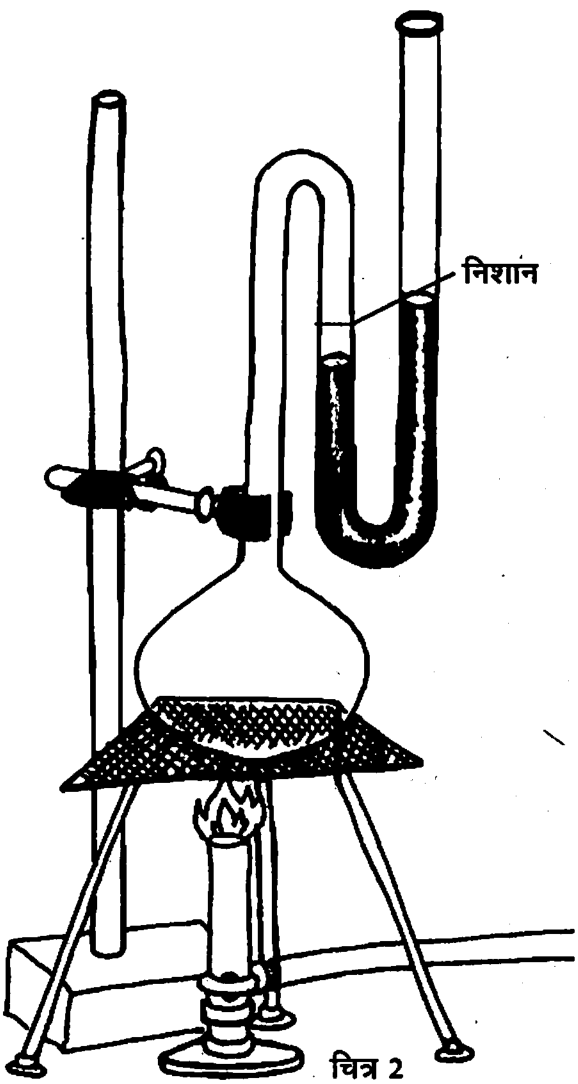
वास्तव में हवा के थर्मामीटर में यही किया जाता है। एक फ्लास्क लेते हैं जिसकी गर्दन में

अंग्रेज़ी के यू अक्षर (U) के आकार की एक रबर की नली लगी होती है। चित्र 1 देखो। इस U भाग में पारा भर देते हैं। फ्लास्क के अंदर और बाहर का तापमान बराबर है तो U में दोनों तरफ पारा एक बराबर स्तर पर रहता हैं। बता सकते हो क्यों? पारे के दोनों तलों पर दबाव बराबर है, इसलिए। जब दोनों तरफ पारा बराबर है तब फ्लास्क की तरफ पारे के तल का निशान लगा देते हैं। यह निशान हमें बताता है कि उस दबाव पर फ्लास्क में उस निशान तक हवा है।



चित्र 1

अब फ्लास्क को उस चीज़ के सम्पर्क में रखते हैं जिसका तापमान नापना है। मान लो कि उसका तापमान फ्लास्क की हवा से अधिक है। जैसे चित्र 2 में दिखाए गए लैम्प की लौ। उस चीज़ के सम्पर्क में आने पर फ्लास्क की हवा फैलने की कोशिश करेगी। मगर हम उसे फैलने नहीं देगे। हमारी कोशिश यह होगी कि हवा का आयतन वही बना रहे। इसके लिए हमें करना यह होगा कि पारे भरी रबर नली को ऊपर नीचे करके फ्लास्क की ओर पारे के तल को निशान तक ले आएँ।



चित्र 2

इस स्थिति में हवा का आयतन उतना ही है जितना शुरू में था मगर अब उसका दबाव बदल गया है। अब नली के दोनों भागों में पारे का तल एक बराबर नहीं बल्कि ऊपर नीचे होगा। उनके बीच का अन्तर देखकर हम फ्लास्क की हवा का दबाव बता सकते हैं और इस आधार पर तापमान भी बता सकते हैं। है न आसान? ● ● ●



चकमक समाचार

बस्ते पर चूहा कविता संग्रह का लोकार्पण



पिछले दिनों दिल्ली पुस्तक मेले में जहाँ बड़े-बड़े लेखकों की पुस्तकों का लोकार्पण हुआ, वहीं नेशनल बुक ट्रस्ट के राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ग्यारह वर्षीय शिवांक की कविताओं के पहले संग्रह का लोकार्पण किया गया। चकमक क्लब द्वारा प्रस्तुत इस संग्रह में शिवांक की चौदह कविताएँ हैं जो शिवांक की हस्तलिपि में ही हैं। इस कार्यक्रम में बच्चों की दुनिया से जुड़े कई लोगों ने शिरकत की।

रिपोर्ट : शिप्रा सिंह, दिल्ली



इस कविता संग्रह की दो कविताएँ हम यहाँ दे रहे हैं......

खरपत्तू बाबा

(कवि त्रिलोचन मेरे खरपत्तू बाबा हैं)

खरपत्तू बाबा जब बोलते हैं
तो बोलते ही जाते हैं
खरपत्तू बाबा जब पढ़ते हैं
तो पढ़ते ही जाते हैं
खरपत्तू बाबा जब नहाते हैं
तो नहाते ही जाते हैं
खरपत्तू बाबा जब हँसते हैं
तो हँसते ही जाते हैं
खरपत्तू बाबा को रोते हुए
हमने कभी नहीं देखा
खरपत्तू बाबा जब रोते होंगे
तो क्या रोते ही जाते होंगे
रोते ही जाते होंगे......

चाँदनी रात

रात जब होती है
तो चाँद निकलता है
चाँदनी रात में
हम खेल भी सकते हैं
जब हमारी लाइट जाती है
तभी तो चाँदनी रात आती है

टिमरनी में हुआ बाल मेला



बाल दिवस के दिन टिमरनी के नगरपालिका स्कूल में एक बाल मेला हुआ। बाल मेले में तकरीबन ढाई सौ बच्चों ने मज़ेदार गतिविधियाँ कीं। इस बाल मेले में बड़ों ने भी शिरकत की। बच्चों ने कबाड़ से जुगाड़ में बेकार पड़ी चीज़ों से मोर, भँवरे जैसी कई जानदार चीज़ें तैयार कीं। विज्ञान के प्रयोगों के कोने में जाकर थोड़ी देर के लिए वे सभी बाल-वैज्ञानिक बन जाते थे। इसके अलावा कागज़ से खिलौने बनाने (ओरीगैमी) और चित्रकला जैसी गतिविधियों में भी बच्चों ने हाथ आज़माए। कागज़ से बनी टोपी बच्चों को खूब पसंद आई।



इस बाल मेले में एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगाई गई। ये पोस्टर बच्चों ने ही तैयार किए थे। इसके साथ ही एक और प्रदर्शनी थी, विद्युत मोटर, पानी साफ करने का यंत्र, लिफ्ट, पानी की टर्बाइन जैसी चीज़ों के मॉडलों की जिन्हें बच्चों ने ही तैयार किए थे। इन मॉडलों ने बच्चों का मन मोह लिया।

इस मेले का आखिरी पड़ाव था बच्चों के लिए एकलव्य द्वारा विकसित किताबों और खिलौनों का। यहाँ बच्चे दिन भर की गतिविधियों के बाद इत्मीनान से कुछ किताबें पढ़ते, खिलौने में गुँथी पहेलियाँ सुलझाते थे।

रिपोर्ट : मधुसूदन दुबे, हरदा, म.प्र.

एक और बाल पत्रिका



बाल पत्रिकाओं की दुनिया में एक और पत्रिका शामिल हो जाएगी। इस नई पत्रिका का नाम है -नई पौध। पत्रिका के पहले अंक का लोकार्पण पिछले दिनों दिल्ली में हुआ। इस अवसर पर कई रचनाकारों ने अपने विचार रखे। इससे सभी सहमत थे कि बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति जस की तस सामने आनी चाहिए। इस पत्रिका के संपादक रामकुमार कृषक हैं।

रिपोर्ट : नंदिता, नागार्जुन नगर, दिल्ली



खेल समाचार

क्रिकेट



नवम्बर में जमकर क्रिकेट मैच हुए। एशेज ट्रॉफी के अलावा पाकिस्तान-ज़िम्बाब्वे सीरीज़, भारत वेस्ट इंडीज़ सीरीज़ आदि।

भारत ने वेस्ट इंडीज़ को तीन टेस्ट मैचों की शृंखला में 2–0 से हराया। इसके बाद के सात एक दिवसीय मैचों की शृंखला वेस्ट इंडीज़ ने 4–3 से जीत ली। मैन ऑफ दि सीरीज़ का खिताब वेस्ट इंडियन खिलाड़ी क्रिस गेल को मिला।

अब भारतीय क्रिकेट टीम 14 जनवरी तक के लिए न्यूज़ीलैण्ड के दौरे पर गई है।

एशेज ट्रॉफी में तीनों टेस्ट ऑस्ट्रेलिया ने जीत लिए हैं। इस शृंखला के दूसरे टेस्ट के तीसरे दिन तेज़ गेंदबाज़ ग्लेन मैक्ग्रॉ ने एक कैच लिया। क्रिकेट के जानकार कहते हैं कि यह कैच क्रिकेट के इतिहास के दो-तीन सबसे अच्छे कैचों में से एक है!

डेविस कप

पेरिस के बर्सी स्टेडियम में खेले गए डेविस कप फायनल का मैच रूस ने जीत लिया है। डेविस कप में रूस की यह पहली जीत है। इस बार की एक खास बात यह थी कि डेविस कप मुकाबलों की दो बेहतरीन टीमें अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया फायनल में नहीं पहुँच पाई थीं।

टेनिस

टेनिस का दूसरा सत्र शुरू होने वाला है। इस सत्र के लिए भारतीय खिलाड़ी लिएन्डर पेस ने अपना नया जोड़ीदार चुन लिया है। यह नया जोड़ीदार है डेविड रिकी। डेविड रिकी चेक गणराज्य के खिलाड़ी हैं।



हॉकी

महिला हॉकी विश्व कप शुरू हो चुका है। ऑस्ट्रेलिया ने अमेरिका को 4–0 से हरा दिया है। उधर ग्रुप बी में इंग्लैण्ड की टीम ने आयरलैण्ड को 3–1 से हराया। जबकि स्पेन व जापान का मैच बराबरी खत्म हुआ।

साइक्लिंग

19वीं राष्ट्रीय जूनियर साइक्लिंग चैम्पियनशिप में गुरप्रीत कौर ने पंजाब के लिए पहला स्वर्ण पदक जीता है। यह चैम्पियनशिप हैदराबाद में हो रही है।

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों का पुरस्कार



यह है लॉरा हैनन्ट। लॉरा की उम्र यूँ तो सिर्फ 16 साल की है पर उसे बच्चों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ने का, जद्दोजहद करने का अच्छा-खासा अनुभव है।

लॉरा कनाडा की रहने वाली है। बचपन से ही उसे दूसरे देश में रहने वाले अपने जैसे बच्चों के बारे में जानने का शौक था। इसी शौक के चलते उसने भारत के बच्चों की भी कई तस्वीरें देखी थीं। वह अपने माँ-पापा से भारत आने की ज़िद करती रहती थी। वे हमेशा यही कहते कि 'जब तुम थोड़ी बड़ी हो जाओ तो चली जाना'। और वह अपने जेब खर्च में से पैसे बचाती रहती।

जब लॉरा 9 साल की हुई तो उसने धीरे-धीरे करके इतने पैसे जोड़ लिए थे कि भारत के सफर का टिकट खरीदा जा सके। तब जब लॉरा ने अपने पापा से फिर पूछा तो वे मना नहीं कर सके।

लॉरा और उसके पापा भारत में मदर टेरेसा से मिलने गए। यह मुलाकात एक ऐसे घर में हुई जो अनाथ बच्चों के लिए बनाया गया था।

लॉरा बताती है, ''ढेर सारे बच्चों से घिरी एक बूढ़ी महिला मेरे पास आई और बोली 'तुम किस क्लास में पढ़ती हो?' मैंने कहा, 'चौथी में।' तब उस महिला ने कहा, 'जब तुम कक्षा 5,6,7,8,9 और 10 तक पढ़ाई पूरी कर लो तो सीधे भारत आ जाना। यहाँ आकर तुम डॉक्टर बनना, बच्चों की मदद करना और मेरे साथ काम करना।' यही मदर टेरेसा थीं।''



लॉरा हैनन्ट

यह सम्बंध यहीं खत्म नहीं हुआ। जैसे-जैसे लॉरा बड़ी होती गई, उसे यह एहसास हुआ कि वह डॉक्टर नहीं बनना चाहती है। पर मदर से बचपन में हुई बातचीत उसे एक वायदे के समान लगती थी। वह बड़े असमंजस में थी। यह उलझन तब और बढ़ गई जब मदर टेरेसा काफी गम्भीर रूप से बीमार हो गईं। आखिरकार लॉरा ने उनको एक चिट्ठी लिखी। ''मैंने मदर को चिट्ठी लिखकर कहा कि मैं डॉक्टर नहीं बनना चाहती। बल्कि मैं टीचर बनकर या किसी और तरह से बच्चों के लिए काम करना चाहती हूँ। उन्होंने मुझे जवाब भेजा जिसमें लिखा था कि जो कुछ मैं बच्चों के लिए कर पाऊँ वह महत्वपूर्ण होगा। इसके लिए डॉक्टर या टीचर बनना कोई ज़रूरी नहीं। उसके बगैर भी बहुत काम किया जा सकता है।''

जब लॉरा दस साल की थी तो उसने पाकिस्तान के एक बच्चे इकबाल मसीह के बारे में सुना। इकबाल कालीन बनाने वाले एक कारखाने में बंधुआ मज़दूर था। यानी उसके अम्मा-अब्बा ने उस कारखाने के मालिक से कभी कुछ रुपए उधार लिए होंगे जिसे वे चुका नहीं सके। तो मालिक ने बदले में इकबाल को हमेशा के लिए अपना गुलाम बना लिया।

बाद में बच्चों के लिए काम करने वाले कुछ लोगों ने इकबाल को उसके मालिक के चंगुल से छुड़ाया और वह आज़ादी के साथ जीने लगा। वह स्कूल भी जाता था और बच्चों के, खासकर अपने जैसे गुलाम बच्चों के अधिकारों के लिए लड़ाई भी लड़ता था। लेकिन यह ज़िन्दगी लम्बी नहीं चली। 1995 में इकबाल का कत्ल हो गया।

इसी इकबाल के बारे में जानने के बाद लॉरा ने फ्री द चिल्ड्रन (बच्चों को आज़ाद करो) नाम की एक संस्था में काम करना शुरू किया। यह संस्था कनाडा के ही एक बच्चे ने शुरू की थी। अब तक वह कई बैठकों, स्कूलों, यहाँ तक कि बड़े-बड़े संगठनों में भी बच्चों के अधिकारों के बारे में और इकबाल के बारे में बोल चुकी है।

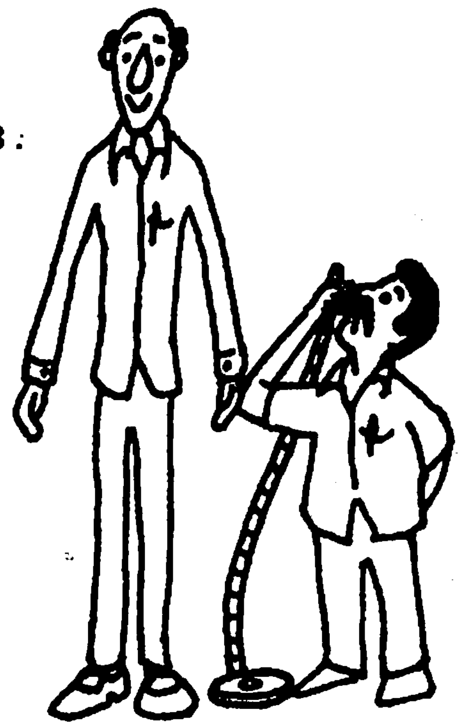
वह कहती है, ''आप चाहें तो अपनी आँखें बन्द कर सकते हैं और दुनिया भर में बच्चों के साथ हो रहे ज़ुल्मों को भूल सकते हैं। पर हमें वही करना चाहिए जो करना हमें सबसे ज़्यादा पसन्द हो। और मुझे बच्चों के लिए काम करना ही सबसे ज़्यादा पसन्द है।''

लॉरा बच्चों के अधिकारों वाले जजों में उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है जो खुद बच्चों के अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं।

चित्र-पहेली

1		2	■	3		4
■	■		■		■	
■	5		6	■	7	
8		■		■	9	
10		■	11	12		■
	■	13	■		■	14
15			■	16		

8.

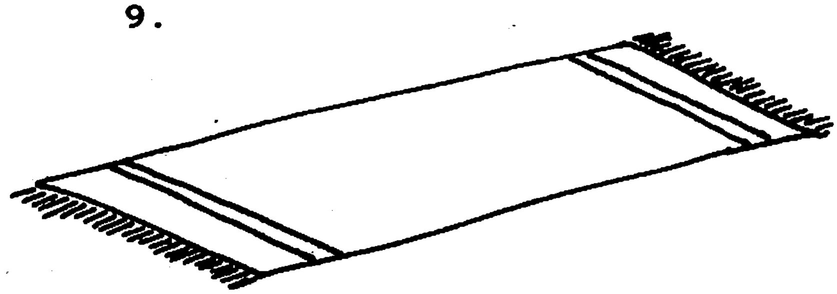


संकेत : बाएँ से दाएँ

1.



9.



3.



10. लत की उलट-पुलट (2)

11.



5. दो पे दो यानी बीस धन दोयानी ? (3)

7. किलोग्राम का एक चौथाई (2)

15.



16.



संकेत : ऊपर से नीचे

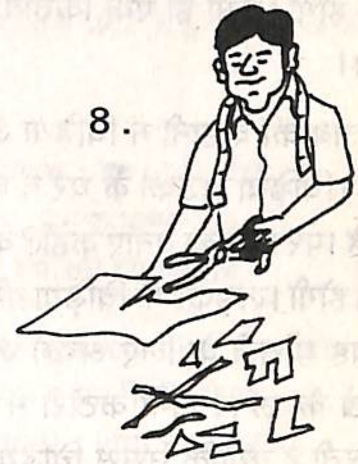
2.



7.



8.



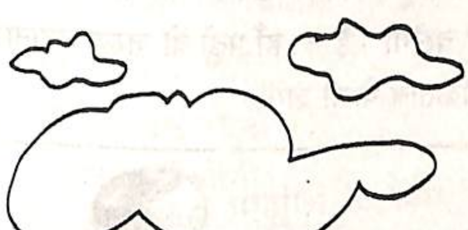
3. सनन में है खून की नली (2)

12.



4. अगला महीना (4)

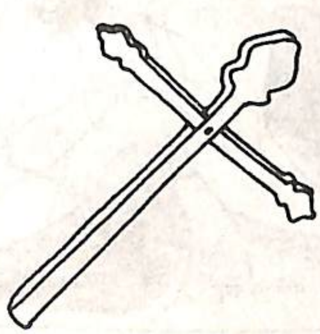
5.



13.



6.



14.



चित्र : आशीष नगरकर



एक थी चिड़िया

क्या तुम्हें चिड़िया देखना अच्छा लगता है? तुम तो बचपन से ही अपने आस-पास चिड़िया देखते हो। चिड़िया के बारे में कहानी कविताएँ भी तुमने पढ़ी या सुनी होंगी। ऐसी ही एक किताब है – **एक थी चिड़िया।**

इस किताब की कहानी में चिड़िया और बच्चे बातें करते हैं। चिड़िया लड़की के घर में घोंसला बनाना चाहती है। पर घोंसला बनाए कहाँ? कौन-सी जगह महफ़ूज़ होगी। लड़की भी चिड़िया की मदद करती है कि वह घोंसले के लिए अच्छी जगह चुने। वह उसे पंखे के ऊपर लगी कटोरी में घर बनाने से मना करती है क्योंकि उससे चिड़िया के बच्चों का चलते हुए पंखे से टकराने का डर रहता है।

चिड़िया और लड़की की बातचीत के ज़रिए ही लेखक यह बात कहना नहीं भूले कि बच्चों को डाँटना ज़रूरी नहीं। इस किताब की कहानी चित्रों के साथ बहुत सरल ढंग से जुड़ पाती है। आवरण के रंगीन चित्र की तरह अन्दर के चित्र भी रंगीन होते तो किताब और अच्छी बन जाती।

● समीक्षा : वीना

किताब का नाम : एक थी चिड़िया
लेखक : मस्तराम कपूर
चित्रकार : एम. ए. जोमराज
प्रकाशक : किताबघर
मूल्य : 10.00 रुपए

खुश हुआ दीनू

इस किताब की कहानी भले ही औसत दर्ज़े की है लेकिन चित्र बड़े मज़ेदार हैं। इस किताब के चित्र मालिनी शिवकुमार ने बनाए हैं। तुम इन चित्रों को आधार बनाकर मज़ेदार और गुदगुदी-भरी कहानियाँ बना सकते हो। इस किताब के चित्रों और कहानी में तालमेल की कुछ कमी लगती है। कहानी की शुरू की दो-तीन लाईनें देखते हैं.... 'दीनू स्कूल से घर लौटा। माँ-बाप तो खेत पर काम के लिए गए हैं। अब क्या करे वह? जंगल की ओर निकल पड़ा। उसके पीछे शेरू ने दौड़ लगा दी। बहुत दूर निकल आया। थक गया तो एक पेड़ के तने से टिककर खड़ा हो गया। शेरू भी वहीं पास में चिड़ियों के पीछे उछल रहा था।'

इतना पढ़कर तुम्हें क्या लगता है? क्या दीनू किसी लड़के का नाम है या कुछ और? दीनू कुल मिलाकर लड़के की तरह पेश आता है। लेकिन अभी तो कुछ और मज़ेदार चीज़ें भी हैं, जैसे – 'दीनू ने अपने नेकर में हाथ डाला। कुछ लाई मुरमुरे पड़े थे' और फिर 'दीनू ये दाने मछलियों को डालने लगता है।'

तो आखिर दीनू है कौन? खैर इसका पता तो किताब पढ़कर ही चलेगा ! है न। हाँ पढ़ो तो ज़रूर बताना कि तुम्हें यह किताब कैसी लगी।





मूँछों की चोरी

हो सकता है इस नाम से तुम समझ बैठे हो कि यह कोई मूँछों की चोरी की कहानी होगी... जी नहीं! दरअसल चोरी तो इस कहानी में मूँछें करती हैं!

चीनू को चीनी फाँकने का शौक होता है। जब मौका मिला, चीनी का डिब्बा खोला और मुट्ठी भर ली।

मम्मी की शिकायतें और पापा की डाँट तो ठीक है। पापा की मूँछें तक उसे चिढ़ाती लगतीं।

चीनू ने खाई चीनी
चोरी से खाई चीनी
चीनू ने खाई चीनी
चीनू की चोरी पकड़ी गई
चीनी की चोरी पकड़ी गई

चीनू के मन में अक्सर सवाल आता कि बड़े लोग बड़े अजीब होते हैं। शक्कर खाओ तो कहते हैं 'बड़े हो गए हो, शक्कर खाते हो' और अगर कहीं घूमने जाने की बात करो, तब कहते हैं 'अभी तो तुम छोटे हो।'

खैर...! एक दिन वह पापा की मूँछें देख रहा था कि उसके हाथ एक सुराग लग जाता है.. और मूँछों की चोरी पकड़ी जाती है।

इस बेहतरीन किताब के जानदार चित्र कहानी को और हँसोड़ बना देते हैं। ये चुलबुले चित्र बनाए हैं प्रिया नागराजन ने। कहानी लिखी है स्वाति श्रीवास्तव ने। उन्हें तुम बार-बार पढ़ना चाहोगे। बेजोड़ किताब में बस दो-चार जगह बिन्दुओं की चूक हुई है।

हमें यकीन है कि चीनू के सुराग को जानने के लिए तुम इसे ज़रूर पढ़ोगे और बड़ों के साथ चौकस भी रहोगे!

किताब का नाम : खुश हुआ दीनू
लेखक : डॉ. हेमन्त कुमार
चित्रकार : मालिनी शिवकुमार

किताब का नाम :मूँछों की चोरी
लेखक : स्वाती श्रीवास्तव
चित्रकार : प्रिया नागराजन

ये किताबें नालंदा लखनऊ, राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र नई दिल्ली (नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया) तथा यूनीसेफ लखनऊ द्वारा आयोजित कार्यशाला में तैयार की गई हैं।

● समीक्षा : सुशील शुक्ल



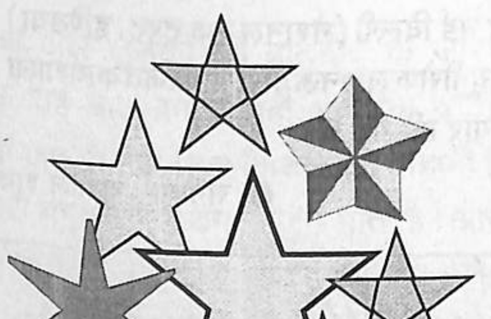


1

''तम मियान मबेने- मबेने मैन के लिए गए। उम नोज आकाश में मूनज गायब था। आकाश मुंदन लग नहा था। कुछ बातल मफेत- मफेत थे और कुछ लाल-लाल मे।''

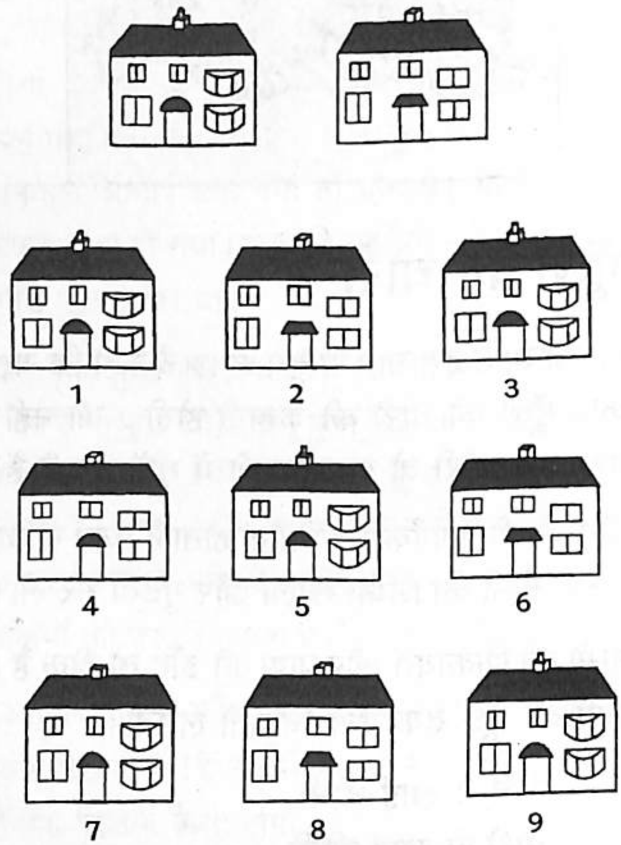
यह एक कहानी का हिस्सा है, सिर्फ तीन अक्षरों की जगह तीन दूसरे अक्षर क्या लिखे, पूरा अर्थ ही बदल गया। हाँ लेकिन ज़रा गौर से देखोगे तो पता चल जाएगा कि कौन-सा अक्षर किस अक्षर के बदले आया है।

3



क्यों? क्या दिन में तारे नजर आने लगे? अच्छा यह तो बताओ कि इनमें से कौन-सा तारा कुछ अलग किस्म का है और क्यों?

2



ये जो ऊपर के दो घर हैं वो स्वाति ने बनाए हैं। थोड़ी देर बाद उसके दो दोस्त, शाहिद और शबाना भी आ गए। उन्होंने भी वैसे ही घर बनाने की कोशिश की। बाकी के नौ घरों को देखकर क्या तुम बता सकते हो कि कौन से घर स्वाति ने नहीं बनाए होंगे।

4



ये काँच का एक गिलास है जिस पर दो सिक्के रखे हैं। क्या तुम दोनों सिक्कों को एक ही समय में उठा सकते हो? बात यहीं खत्म नहीं हो जाती.. तुम्हें यह काम सिर्फ दो उँगलियों की मदद से करना है। कोशिश कर देखो।

6

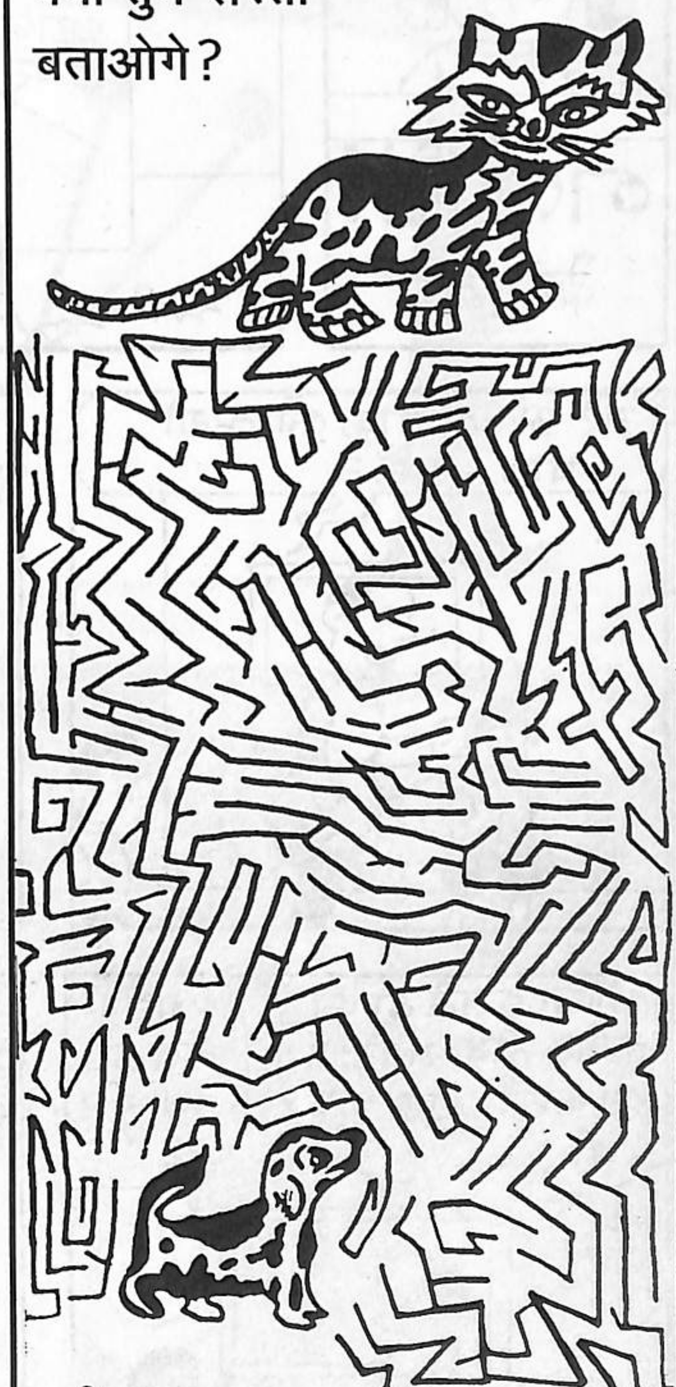
	16	9	14	
	11	13	15	
	12	17	10	

यूँ तो यह पच्चीस खानों वाला वर्ग है मगर अभी कुल 9 खानों में अंक भरे हैं। इन अंकों को चाहे तुम ऊपर से नीचे की ओर जोड़ो या तिरछे में या फिर बाएँ से दाएँ, जोड़ 39 ही आएगा।

तुम्हें बाकी के खाली खानों में कुछ अंक भरने हैं। लेकिन यह बात ध्यान में रखना कि तुम 1 से 25 तक के ही अंक भर सकते हो, कोई भी अंक दो बार नहीं आना चाहिए, और खड़े, आड़े या तिरछे कैसे भी जोड़ें, जोड़ 65 ही आए।

5

कुत्ते को पहुँचना है, बिल्ली तक। कैसे पहुँचे? क्या तुम रास्ता बताओगे?



चित्र
धर्मपाल डोगरा 'मिन्टू', जालन्धर, पंजाब

क्या कहने ....!!



नताशा
देवांशु वत्स
एक दिन नताशा अपने पड़ोस से गुजर रही थी. तभी..
धूम
धड़ाक
थप्पर
?
अरे अंकल पीकू को क्यों पीट रहे हैं?
अरे क्या बताऊं, आज इसने नया जूता पहना तो मैंने इसे एक की बजाए दो सीढ़ियां तय करने को कहा ताकि सोल कम घिसे ....
अच्छा!
लेकिन इसने दो की बजाए तीन सीढ़ियां तय करनी शुरू कर दी ....
वाह! तब इसे क्यों पीट रहे हैं?
इससे कमबख्त की पतलून जो फट गई!!!
?



शीरीन, 4 वर्ष, जयपुर, राजस्थान



जानकी जोशी, सातवी, गुजरात

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2002



अरुणिमा मोहिते, चौथी, भोपाल, म.प्र.